१ ओं

नित्त नेम

ते होर बाणीआं



प्रकाशक :-

सैक्रेटरी-शिरोमणि गु: प्रबन्धक कमेटी,

अमृतसर।

ततकरा

१ ओं वाहिगुरू जी की फतह ॥

प्रस्तावना

हम अपने चारों ओर एक संघर्ष सा होता हुआ देख रहे हैं, सत्ता और अधिकार प्राप्ति का भयानक सङ्घर्ष ! जिस के कारण संसार आज एक विशाल दुःखागार बन कर रह गया है। प्रत्येक व्यक्ति दुःखी है—गरीब और क्या अमीर, राजा और क्या रङ्क, सब बांसों की अग्नि की भान्ति अपने ही सङ्घर्ष से भड़काई हुई ज्वाला में दग्ध हुए जा रहे हैं। और यह सब कुछ हो रहा हैं सुख की आशा में। सब कोई चाहते तो सुख हैं किन्तु नहीं जानते कि सुख है कहां ! मरीचिका में तृपातुर मृग की तरह भौतिक पदार्थों में सुख की तलाश में भटकने हुए ठोकरें खा रहे हैं।

इस से कहीं भयानक दशा थी जगत् की श्री गुरुओं के आगमन से पहले। जगदाधार वाहिगुरू ने गुरुवाणी का प्रकाश देकर गुरू नानक महाराज को संसार में भेजा। गुरु-वाणी की जो दिव्य-ज्योति दश मानव शरीरों में आकर ठोकरें खा रही मानवता को सुमार्ग दिखाती रही, अब उसका प्रकाश श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में विद्यमान है, जिस के पाठ मे आज भी लाखों सन्तप्त हृदय शान्ति प्राप्त कर रहे हैं। जो दुःखों से प्रपीड़ित और निराशा के सागर में डुबकियां लेती हुई मानवता को आज भी सुख शान्ति और सांत्वणा प्रदान कर रही है। उसी में से यह कतिपय विशेष वाणियों का एक छोटा सा संग्रह है। जिसे 'नित्य नियम' (नित्त नेम) का नाम दिया गया है।

इस में पहली वाणी 'जपुजी साहिब' है। यह प्रथम सत्गुरू नानक देव महाराज की वाणी है, श्री गुरू ग्रंथ साहिब में भी इसे सब से पहिला स्थान प्राप्त हुआ है। उस के पश्चात 'शब्द हजारे' हैं। इस में पञ्चम गुरु अर्जुन देव तथा प्रथम सत्गुरू की वाणियां हैं जो श्री गुरू ग्रन्थ साहिब के भिन्न २ रागों में से सङ्कलित की गई हैं।

स्मरण रहे कि सब सत्गुरुओं में गुरू नानक की ही 'ज्योति' विद्यमान थी इस लिए सब गुरु व्यक्ति अपनी वाणी में शब्द (भजन) के अन्त में कर्त्ता का नाम 'नानक' लिखते रहे किन्तु यह जानने के लिए कि किस गुरु व्यक्ति की कौनसी रचना है, प्रत्येक शब्द के आदि में 'महला' लिखा है। 'महला १' से अभिप्राय है गुरु नानक, महला ५ से

तात्पर्य है गुरु अर्जुन देव। इसी प्रकार दूसरे सत्गुरुओं की वाणी के विषय में भी समझना चाहिये।

'जापु साहिब' तथा 'त्व प्रसादि स्वैये' दशम गुरू जी की वाणियां हैं। 'रहरासि' में भी भिन्न २ गुरू व्यक्तियों की वाणियां हैं और अन्त में 'बारह माह' है। बारह महीनों द्वारा उपदेश। संक्रान्ति के दिन इस के पाठ का नियम है।

गुरूवाणी में शब्दान्तिक ह्रस्व-स्वरों (मात्राओं) का उच्चारण प्रायः नहीं होता। यह केवल व्याकरणिक अर्थ-भेद प्रगट करने के लिये लिखी जाती हैं। यथा—'सतिनामु' का उच्चारण है 'सत्य नाम'। 'करता पुरखु' का उच्चारण होगा 'कर्त्ता पुरख' इत्यादि।

—प्रकाशक

जपुजी

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकालमूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ जपु ॥ आदि सचु जुगादि सचु ॥ है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥१॥ सोचै सोचि न होवई जे सोची लखवार ॥ चुपै चुपि न होवई जे लाइ रहा लिव तार ॥ भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार ॥ सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥ किव सचिआरा होईऐ किव

कूड़ तुटै पालि ॥ हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥१॥ हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥ हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥ हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ॥ इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥ हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥ नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥२॥ गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥ गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥ गावै को गुण वडिआईआ चार ॥ गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥ गावै को साजि करे तनु खेह ॥ गावै को जीअ लै

फिरि देह ॥ गावै को जापै दिसै दूरि ॥
गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥ कथना कथी
न आवै तोटि ॥ कथि कथि कथी कोटी
कोटि कोटि ॥ देदा दे लैदे थकि पाहि ॥
जुगा जुगंतरि खाही खाहि॥ हुकमी हुकमु
चलाए राहु ॥ नानक विगसै वेपरवाहु ॥
३॥ साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ
भाउ अपारु ॥ आखहि मंगहि देहि देहि
दाति करे दातारु ॥ फेरि कि अगै रखीऐ
जितु दिसै दरवारु ॥ मुहौ कि बोलणु
बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु ॥ अंमृत
वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु॥ करमी
आवै कपड़ा नदरी मोखु दूआरु॥ नानक
एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥४॥

थापिआ न जाइ कीता न होइ ॥ आपे आपि निरंजनु सोइ ॥ जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ॥ नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥ गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥ दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥ गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई ॥ गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥ जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ॥ गुरा इक देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥५॥ तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी । जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ॥

मति विचि रतन-जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥ गुरा इक देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ।६॥ जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥ नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ॥ चंगा नाउ रखाइकै जसु कीरति जगि लेइ ॥ जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥ कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥ नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ॥ तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे ॥७॥ सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ ॥ सुणिऐ धरति धवल आकास॥ सुणिऐ दीप लोअ

मंनै मगु न चलै पंथु ॥ मंनै धरम सेती सनबंधु ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१४॥ मनै पावहि मोखु दुआरु ॥ मनै परवारै साधारु ॥ मनै तरै तारे गुरु सिख ॥ मंनै नानक भवहि न भिख ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१५॥ पंच परवाण पंच परधानु ॥ पंचे पावहि दरगहि मानु ॥ पंचे सोहहि दरि राजानु ॥ पंचा का गुरु एकु धिआनु ॥ जे को कहै करै वीचारु ॥ करते कै करणै नाही सुमारु ॥ धौलु धरमु दइआ का पूतु ॥ संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥ जे को बुझै होवै सचिआरु ॥

असंख भगत गुण गिआन वीचार॥असंख सती असंख दातार ॥ असंख सूर मुह भख सार॥ असंख मोनि लिव लाइ तार॥ कुदरति कवण कहा वीचारु॥ वारिआ न जावा एक वार॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥१७॥ असंख मूरख अंध घोर ॥ असंख चोर हरामखोर॥ असंख अमर करि जाहि जोर ॥ असंख गलवढ हतिआ कमाहि॥ असंख पापी पापु करि जाहि ॥ असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि॥ असंख मलेछ मलु भखि खाहि॥असंख निंदक सिरि करहि भारु ॥ नानकु नीचु कहै वीचारु॥ वारिआ न जावा एक

वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१८॥
असंख नाव असंख थाव ॥ अगंम अगंम
असंख लोअ ॥ असंख कहहि सिरि भारु
होइ ॥ अखरी नामु अखरी सालाह ॥
अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥ अखरी
लिखणु बोलणु बाणि ॥ अखरा सिरि
संजोगु वखाणि ॥ जिनि एहि लिखे
तिसु सिरि नाहि ॥ जिव फुरमाए तिव
तिव पाहि ॥ जेता कीता तेता नाउ ॥
विणु नावै नाही को थाउ ॥ कुदरति
कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा
एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली
कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार॥१९॥

भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥ पाणी धोतै उतरसु खेह ॥ मूत पलीती कपड़ु होइ ॥ दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥ भरीऐ मति पापा कै संगि ॥ ओहु धोपै नावै कै रंगि॥ पुंनी पापी आखणु नाहि ॥ करि करि करणा लिखि लै जाहु॥ आपे बीजि आपे ही खाहु ॥ नानक हुकमी आवहु जाहु ॥२०॥ तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥ जे को पावै तिल का मानु ॥ सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥ अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥ सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥ विणु गुण कीते भगति न होइ ॥ सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥ सति सुहाणु सदा मनि

चाउ ॥ कवणु सु वेला वखतु कवणु
कवण थिति कवणु वारु ॥ कवणि सि
रुती माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥
वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु
पुराणु ॥ वखतु न पाइओ कादीआ जि
लिखनि लेखु कुराणु ॥ थिति वारु ना
जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥ जा
करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै
सोई ॥ किव करि आखा किव सालाही
किउ वरनी किव जाणा ॥ नानक
आखणि सभु को आखै इकदू इकु
सिआणा ॥ वडा साहिबु वडी नाई कीता
जाका होवै ॥ नानक जे को आपौ जाणै
अगै गइआ न सोहै ॥ २१ ॥ पाताला

पाताल लख आगासा आगास ॥ ओडक ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात ॥ सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु ॥ लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु॥ नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु ॥ २२ ॥ सालाही सालाहि एती सुरति न पाईआ ॥ नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि ॥ समुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ॥ कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥ २३ ॥ अंतु न सिफती कहणि न अंतु ॥ अंतु न करणै देणि न अंतु ॥ अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ॥ अंतु न जापै किआ मनि मंतु ॥

भूख सद मार ॥ एहि भि दाति तेरी दातार ॥ बंदि खलासी भाणै होइ ॥ होरु आखि न सकै कोइ ॥ जे को खाइकु आखणि पाइ ॥ ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥ आपे जाणै आपे देइ ॥ आखहि सि भि केई केइ ॥ जिसनो बखसे सिफति सालाह ॥ नानक पातिसाही पातिसाहु ॥ २५ ॥ अमुल गुण अमुल वापार ॥ अमुल वापारीए अमुल भंडार ॥ अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥ अमुल भाइ अमुला समाहि ॥ अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥ अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥ अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ॥ अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥ अमुलो

अमुलु आखिआ न जाइ॥ आखि आखि रहे लिव लाइ॥ आखहि वेद पाठ पुराण॥ आखहि पड़े करहि वखिआण ॥ आखहि वरमे आखहि इंद ॥ आखहि गोपी तै गोविंद ॥ आखहि ईसर आखहि सिध ॥ आखहि केते कीते वुध ॥ आखहि दानव आखहि देव ॥ आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥ केते आखहि आखणि पाहि ॥ केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥ एते कीते होरि करेहि॥ ता आखि न सकहि केई केइ ॥ जे वडु भावै तेवडु होइ ॥ नानक जाणै साचा सोइ ॥ जे को आखै वोलु विगाडु ॥ ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु ॥२६॥

सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥ वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥ केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे॥ गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे॥ गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे॥ गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे॥ गावहि इंद इंदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले। गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे॥ गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे॥ गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले॥ गावहि मोहणीआ मनु मोहनि

सुरगा मछ पइआले॥ गावनि रतन उपाए
तेरे अठसठि तीरथ नाले॥गावहि जोध महा
बल सूरा गावहि खाणी चारे ॥ गावहि
खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे
धारे॥ सेई तुधु नो गावहि जो तुधु
भावनि रते तेरे भगत रसाले॥ होरि केते
गावनि से मै चिति न आवनि नानकु
किआ वीचारे॥ सोई सोई सदा सचु
साहिबु साचा साची नाई॥ है भी होसी
जाइ न जासी रचना जिनि रचाई॥ रंगी
रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ
जिनि उपाई॥ करि करि वेखै कीता
आपणा जिव तिस दी वडिआई॥ जो
तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा

जाई ॥ सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु
नानक रहणु रजाई॥२७॥ मुंदा संतोखु
सरमु पतु झोली धिआन की करहि
बिभूति ॥ खिंथा कालु कुआरी काइआ
जुगति डंडा परतीति ॥ आई पंथी सगल
जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥ आदेसु
तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि
अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२८॥
भुगति गिआनु दइआ भंडारणि घटि
घटि वाजहि नाद ॥ आपि नाथु नाथी
सभ जाकी रिधि सिधि अवरा साद ॥
संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे
आवहि भाग ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु

एको वेसु ॥ २९ ॥ एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु॥इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु ॥ जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ॥ ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु ॥ आदेसु तिसै आदेसु॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३०॥ आसणु लोइ लोइ भंडार ॥ जो किछु पाइआ सु एका वार ॥ करि करि वेखै सिरजणहारु ॥ नानक सचे की साची कार ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु॥३१॥इकदू जीभौ लख होहि लख होवहि

लख वीस॥ लखु लखु गेडा आखीअहि एकु नामु जगदीस॥ एतु राहि पति पव- ड़ीआ चड़ीऐ होइ इकीस ॥ सुणि गला आकास की कीटा आई रीस ॥ नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥३२॥ आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥ जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥ जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ॥ जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥ जोरु न सुरती गिआनि वीचारि ॥ जोरु न जुगती छुटै संसारु॥ जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ ॥ नानक उतमु नीचु न कोइ ॥३३॥ राती रुती थिती वार ॥ पवण पाणी अगनी पाताल ॥ तिसु विचि धरती थापि रखी

धरमसाल ॥ तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ॥ तिन के नाम अनेक अनंत ॥ करमी करमी होइ वीचारु ॥ सचा आपि सचा दरबारु ॥ तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥ नदरी करमि पवै नीसाणु ॥ कच पकाई ओथै पाइ ॥ नानक गइआ जापै जाइ ॥३४॥ धरम खंड का एहो धरमु ॥ गिआन खंड का आखहु करमु ॥ केते पवण पाणी वैसंतर केते कान्ह महेस ॥ केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ॥ केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥ केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥ केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥ केते देव दानव

मुनि केते केते रतन समुंद ॥ केतीआ
खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ॥
केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु
न अंतु ॥ ३५ ॥ गिआन खंड महि
गिआनु परचंडु ॥ तिथै नाद बिनोद कोड
अनंदु ॥ सरम खंड की बाणी रूपु ॥
तिथै घाडति घडीऐ बहुतु अनूपु ॥
ता कीआ गला कथीआ ना जाहि॥जे को
कहै पिछै पछुताइ॥ तिथै घड़ीऐ सुरति
मति मनि बुधि ॥ तिथै घड़ीऐ सुरा
सिधा की सुधि ॥३६॥ करम खंड की
बाणी जोरु ॥ तिथै होरु न कोई होरु ॥
तिथै जोध महाबल सूर ॥ तिन महि रामु
रहिआ भरपूर॥ तिथै सीतो सीता महिमा

माहि॥ ताके रूप न कथने जाहि॥ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥ जिनकै रामु वसै मन माहि ॥ तिथै भगत वसहि के लोअ॥ करहि अनंदु सचा मनि सोइ॥सच खंडि वसै निरंकारु॥ करि करि वेखै नदरि निहाल ॥ तिथै खंड मंडल वरभंड॥ जेको कथै त अंत न अंत ॥ तिथै लोअ लोअ आकार॥ जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥ वेखै विगसै करि वीचारु॥ नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥ जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु॥ अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥ भउ खला अगनि तप ताउ ॥ भांडा भाउ अंमृतु तितु ढालि ॥ घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥ जिन कउ

मुनि केते केते रतन समुंद ॥ केतीआ
खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ॥
केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु
न अंतु ॥३५॥ गिआन खंड महि
गिआनु परचंडु॥ तिथै नाद बिनोद कोड
अनदु ॥ सरम खंड की बाणी रूपु ॥
तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥
ता कीआ गला कथीआ ना जाहि॥जे को
कहै पिछै पछुताइ॥ तिथै घडीऐ सुरति
मति मनि बुधि ॥ तिथै घड़ीऐ सुरा
सिधा की सुधि ॥३६॥ करम खंड की
बाणी जोरु ॥ तिथै होरु न कोई होरु ॥
तिथै जोध महाबल सूर ॥ तिन महि रामु
रहिआ भरपूर॥ तिथै सीतो सीता महिमा

माहि॥ ताके रूप न कथने जाहि॥ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥ जिनकै रामु वसै मन माहि ॥ तिथै भगत वसहि के लोअ॥ करहि अनंदु सचा मनि सोइ॥सच खंडि वसै निरंकारु॥ करि करि वेखै नदरि निहाल ॥ तिथै खंड मंडल वरभंड॥ जेको कथै त अंत न अंत ॥ तिथै लोअ लोअ आकार ॥ जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥ वेखै विगसै करि वीचारु ॥ नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥ जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु॥ अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥ भउ खला अगनि तप ताउ ॥ भांडा भाउ अंमृतु तितु ढालि ॥ घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥ जिन कउ

नदरि करमु तिन कार ॥ नानक नदरी नदरि निहाल ॥३८॥

सलोकु

पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु॥ दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥ चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥ करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥ जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥ नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥१॥



१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सबद हजारे

माझ महला ५

चउपदे घरु १

मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई ॥ बिलप करे चात्रिक की निआई ॥ त्रिखा न उतरै सांति न आवै बिनु दरसन संत पिआरे जीउ ॥१॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई गुर दरसन संत पिआरे जीउ॥१॥ रहाउ॥ तेरा मुखु सुहावा जीउ सहज धुनि बाणी ॥ चिरु होआ देखे सारिंगपाणी ॥

धंनु सु देसु जहा तूं वसिआ मेरे सजण मीत मुरारे जीउ ॥ २ ॥ हउ घोली हउ घोलि घुमाई गुर सजण मीत मुरारे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इक घड़ी न मिलते ता कलिजुगु होता ॥ हुणि कदि मिलीऐ प्रिअ तुधु भगवंता॥ मोहि रैणि न विहावै नीद न आवै बिनु देखे गुर दरबारे जीउ ॥३॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई तिसु सचे गुर दरबारे जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ भागु होआ गुरि संतु मिलाइआ ॥ प्रभु अबिनासी घर महि पाइआ॥सेव करी पलु चसा न विछुड़ा जन नानक दास तुमारे जीउ ॥४॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई जन नानकदास तुमारे जीउ॥रहाउ ॥१॥८॥

धनासरी महला १

घरु १ चउपदे

१ ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

जीउ डरतु है आपणा कै सिउ करी पुकार ॥ दूख विसारणु सेविआ सदा सदा दातारु ॥ १ ॥ साहिबु मेरा नीत नवा सदा सदा दातारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनदिनु साहिबु सेवीऐ अंति छडाए सोइ ॥ सुणि सुणि मेरी कामणी पारि उतारा होइ ॥ २ ॥ दइआल तेरै नामि तरा ॥ सद कुरबाणै जाउ ॥१॥ रहाउ ॥

सरबं साचा एकु है दूजा नाही कोइ ॥
ताकी सेवा सो करे जा कउ नदरि
करे ॥३॥ तुधु बाझु पिआरे केव रहा ॥
सा वडिआई देहि जितु नामि तेरे लागि
रहां ॥ दूजा नाही कोइ जिसु आगै
पिआरे जाइ कहा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सेवी
साहिबु आपणा अवरु न जाचउं कोइ ॥
नानकु ताका दासु है बिंद बिंद चुख चुख
होइ ॥४॥ साहिब तेरे नाम विटहु बिंद
बिंद चुख चुख होइ ॥१॥ रहाउ ॥४॥१॥

तिलंग महला १ घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

इहु तनु माइआ पाहिआ पिआरे

लीतड़ा लवि रंगाए ॥ मेरै कंत न भावै
चोलड़ा पिआरे किउ धन सेजै जाए॥१॥
हंउ कुरबानै जाउ मिहरवाना हंउ कुरबानै
जाउ ॥ हंउ कुरबानै जाउ तिना कै लैनि
जो तेरा नाउ॥ लैनि जो तेरा नाउ तिना
कै हंउ सद कुरबानै जाउ ॥१॥ रहाउ ॥
काइआ रंङणि जे थीऐ पिआरे पाईऐ
नाउ मजीठ॥ रंङण वाला जे रंङै साहिबु
ऐसा रंगु न डीठ ॥ २ ॥ जिन के चोले
रतड़े पिआरे कंतु तिना कै पासि ॥ धूड़
तिना की जे मिलै जी कहु नानक की
अरदासि ॥३॥ आपे साजे आपे रंगे
आपे नदरि करेइ ॥ नानक कामणि कंतै
भावै आपे ही रावेइ ॥४॥१॥३॥

तिलंग म० १

इआनड़ीए मानड़ा काइ करेहि ॥ आपनड़ै घरि हरि रंगो की न माणेहि ॥ सहु नेड़ै धन कंमलीए बाहरु किआ ढूढेहि ॥ भै कीआ देहि सलाइआ नैणी भाव का करि सीगारो ॥ ता सोहागणि जाणीऐ लागी जा सहु धरे पिआरो ॥१॥ इआणी बाली किआ करे जा धन कंत न भावै ॥ करण पलाह करे बहुतेरे साधन महलु न पावै ॥ विणु करमा किछु पाईऐ नाही जे बहुतेरा धावै ॥ लब लोभ अहंकार की माती माइआ माहि समाणी ॥ इनी बाती सहु पाईऐ नाही

भई कामणि इन्आणी ॥२॥ जाइ पुछहु सोहागणी वाहे किनी वाती सहु पाईऐ ॥ जो किछु करे सो भला करि मानीऐ हिकमति हुकमु चुकाईऐ ॥ जाकै प्रेमि पदारथु पाईऐ तउ चरणी चितु लाईऐ ॥ सहु कहै सो कीजै तनु मनो दीजै ऐसा परमलु लाईऐ ॥ एव कहहि सोहागणी भैणे इनी वाती सहु पाईऐ ॥३॥ आपु गवाईऐ ता सहु पाईऐ अउरु कैसी चतुराई ॥ सहु नदरि करि देखै सो दिनु लेखै कामणि नउ निधि पाई ॥ आपणे कंत पिआरी सा सोहागणि नानक सा सभराई ॥ ऐसै रंगि राती सहज की माती अहिनिसि भाइ समाणी ॥ सुंदरि

साइ सरूप विचखणि कहीऐ सा सिआणी ॥४॥२॥४॥

सूही महला १

कउण तराजी कवणु तुला तेरा कवणु सराफु बुलावा ॥ कउणु गुरू कै पहि दीखिआ लेवा कै पहि मुलु करावा ॥१॥ मेरे लाल जीउ तेरा अंतु न जाणा ॥ तूं जलि थलि महीअलि भरि पुरि लीणा तूं आपे सरब समाणा ॥१॥ रहाउ ॥ मनु ताराजी चितु तुला तेरी सेव सराफु कमावा ॥ घट ही भीतरि सो सहु तोली इन्ह बिधि चितु रहावा॥ २ ॥ आपे कंडा तोलु तराजी आपे तोलण

सुआमी मै मूरख कहणु न जाई ॥१॥
तेरे गुण गावा देहि बुझाई ॥ जैसे सच
महि रहउ रजाई ॥१॥ रहाउ ॥ जो किछु
होआ सभु किछु तुझ ते तेरी सभ अस-
नाई ॥ तेरा अंतु न जाणा मेरे साहिब मै
अंधुले किआ चतुराई ॥ २ ॥ किआ हउ
कथी कथे कथि देखा मै अकथु न कथना
जाई ॥ जो तुधु भावै सोई आखा तिलु
तेरी वडिआई ॥ ३ ॥ एते कूकर हउ
बेगाना भउका इसु तन ताई ॥
भगति हीणु नानकु जे होइगा ता खसमै
नाउ ना जाई ॥ ४ ॥१॥

बिलावलु महला १

मनु मंदरु तनु वेस कलंदरु घट ही तीरथि नावा ॥ एकु सबदु मेरै प्रानि बसतु है बाहुड़ि जनमि न आवा ॥ १ ॥ मनु बेधिआ दइआल सेती मेरी माई ॥ कउणु जाणै पीर पराई ॥ हम नाही चिंत पराई ।।१ ॥ रहाउ ॥ अगम अगोचर अलख अपारा चिंता करहु हमारी ॥ जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा घटि घटि जोति तुम्हारी ॥ २ ॥ सिख मति सभ बुधि तुम्हारी मंदिर छावा तेरे॥ तुझ बिनु अवरु न जाणा मेरे साहिबा गुण गावा नित तेरे॥३॥ जीअ जंत सभि

सरणि तुम्हारी सरब चिंत तुधु पासे ॥
जो तुधु भावै सोई चंगा इक नानक की
अरदासे ॥ ४ ॥ २ ॥



१ ओं

जापु साहिब



१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ जापु ॥

श्री मुखवाक पातिसाही १० ॥

छपै छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

चक्र चिहन अरु बरन जाति अरु पाति नहिन जिह ॥ रूप रंग अरु रेख भेख कोऊ कहि न सकत किह ॥ अचल मूरति अनभउ प्रकास अमितोजि कहिज्जै ॥ कोटि इंद्र इंद्राण साहु साहाणि गणिज्जै ॥ त्रिभवण महीप सुर नर असुर नेत नेत बन तृण कहत ॥ तव सरब नाम कथै कवन करम नाम बरनत सुमत ॥ १ ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमसत्वं अकाले ॥ नमसत्वं कृपाले ॥
नमसतं अरूपे ॥ नमसतं अनूपे ॥२॥
नमसतं अभेखे ॥ नमसतं अलेखे ॥
नमसतं अकाए ॥ नमसतं अजाए ॥३॥
नमसतं अगंजे ॥ नमसतं अभंजे ॥
नमसतं अनामे ॥ नमसतं अठामे ॥४॥
नमसतं अकरमं ॥ नमसतं अधरमं ॥
नमसतं अनामं ॥ नमसतं अधामं ॥५॥
नमसतं अजीते ॥ नमसतं अभीते ॥
नमसतं अबाहे ॥ नमसतं अढाहे ॥६॥
नमसतं अनीले ॥ नमसतं अनादे ॥
नमसतं अछेदे ॥ नमसतं अगाधे ॥७॥
नमसतं अगंजे ॥ नमसतं अभंजे ॥

नमो सरब रंगे ॥ नमो सरब भंगे ॥२२॥
नमो काल काले॥ नमसतसतु दिआले॥
नमसतं अबरने ॥ नमसतं अमरने ॥२३॥
नमसतं जरारं ॥ नमसतं क्रितारं ॥
नमो सरब धंधे ॥ नमो सत अबंधे ॥२४॥
नमसतं निरसाके ॥ नमसतं निरबाके ॥
नमसतं रहीमे ॥ नमसतं करीमे ॥२५॥
नमसतं अनंते ॥ नमसतं महंते ॥
नमसतसतु रागे ॥ नमसतं सुहागे ॥२६॥
नमो सरब सोखं ॥ नमो सरब पोखं ॥
नमो सरब करता ॥ नमो सरब
हरता ॥२७॥ नमो जोग जोगे ॥ नमो
भोग भोगे ॥ नमो सरब दिआले ॥ नमो
सरब पाले ॥ २८ ॥

चाचरी छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

अरूप हैं ॥ अनूप हैं ॥ अजू हैं ॥
अभू हैं ॥२९॥ अलेख हैं ॥ अभेख हैं॥
अनाम हैं ॥ अकाम हैं ॥३०॥ अधे हैं॥
अभे हैं ॥ अजीत हैं॥ अभीत हैं ॥३१॥
त्रिमान हैं ॥ निधान हैं ॥ त्रिबरग हैं ॥
असरग हैं ॥३२॥ अनील हैं ॥ अनादि
हैं ॥ अजे हैं ॥ अजादि हैं ॥३३॥
अजनम हैं ॥ अबरन हैं ॥ अभूत हैं ॥
अभरन हैं ॥३४॥ अगंज हैं ॥ अभंज
हैं॥ अभूझ हैं ॥ अझंझ हैं ॥३५॥
अमीक हैं॥ रफीक हैं ॥ अधंध हैं ॥
अबंध हैं ॥३६॥निरबूझ हैं॥ असूझ हैं॥
अकाल हैं ॥ अजाल हैं ॥३७॥ अलाह

हैं ॥ अजाह हैं ॥ अनंत हैं ॥ महंत हैं ॥३८॥ अलीक हैं ॥ निरसीक हैं ॥ निरलभ हैं ॥ असंभ हैं ॥३६॥ अगंम हैं ॥ अजंम हैं ॥ अभूत हैं ॥ अछूत हैं ॥४०॥ अलोक हैं ॥ असोक हैं ॥ अकरम हैं ॥ अभरम हैं ॥४१॥ अजीत हैं ॥ अभीत हैं ॥ अबाह हैं ॥ अगाह हैं ॥४२॥ अमान हैं ॥ निधान हैं ॥ अनेक हैं ॥ फिरि एक हैं ॥४३॥

भुजग प्रयात छंद ॥

नमो सरब माने ॥ समसती निधाने ॥
नमो देव देवे ॥ अभेखी अभेवे ॥४४॥
नमो काल काले ॥ नमो सरब पाले ॥
नमो सरब गउणे ॥ नमो सरब

भउणे ॥४५॥ अनंगी अनाथे ॥ निरसंगी प्रमाथे ॥ नमो भान भाने ॥ नमो मान माने ॥४६॥ नमो चंद्र चंद्रे ॥ नमो भान भाने ॥ नमो गीत गीते ॥ नमो तान ताने ॥४७॥ नमो नृत्त नृत्ते ॥ नमो नाद नादे ॥ नमो पान पाने ॥ नमो वाद वादे ॥४८॥ अनंगी अनामे ॥ समसती सरूपे ॥ प्रभंगी प्रमाथे ॥ समसती विभूते ॥४९॥ कलंकं बिना नेकलंकी सरूपे ॥ नमो राज राजेस्वरं परम रूपे ॥५०॥ नमो जोग जोगेस्वरं परम सिद्धे ॥ नमो राज राजेस्वरं परम वृद्धे ॥५१॥ नमो सस्त्रपाणे ॥ नमो अस्त्रमाणे ॥ नमो परम गिआता ॥

नमो लोक माता ॥५२॥ अभेखी
अभरमी अभोगी अभुगते ॥ नमो जोग
जोगेस्वर परम जुगते ॥५३॥ नमो नित्त
नाराइणे क्रूर करमे ॥ नमो प्रेत अप्रेत
देवे सुधरमे ॥ ॥५४॥ नमो रोग हरता
नमो राग रूपे ॥ नमो साह साहं नमो
भूप भूपे ॥५५॥ नमो दान दाने नमो
मान मानं ॥ नमो रोग रोगे नमसतं
इसनानं ॥५६॥ नमो मंत्र मंत्रं ॥ नमो
जंत्र जंत्रं ॥ नमो इसट इसटे ॥ नमो
तंत्र तंत्रं ॥५७॥ सदा सच्चदानंद सरबं
प्रणासी ॥ अनूपे अरूपे सससतुल
निवासी ॥५८॥ सदा सिद्धदा बुद्धदा
बृद्ध करता ॥ अधो उरध अरधं अघं

ओघ हरता ॥५६॥ परं परम परमेस्वरं प्रोछपालं ॥ सदा सरबदा सिद्ध दाता दिआलं ॥६०॥ अछेदी अभेदी अनामं अकामं ॥ समसतो पराजी समसतसतु धामं ॥६१॥

तेरा जोरु ॥ चाचरी छंद ॥

जले हैं ॥ थले हैं ॥ अभीत हैं ॥ अभे हैं ॥६२॥ प्रभू हैं ॥ अजू हैं ॥ अदेस हैं ॥ अभेस हैं ॥६३॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

अगाधे अबाधे ॥ अनंदी सरूपे ॥ नमो सरब माने ॥ समसती निधाने ॥६४॥ नमसत्वं निरनाथे ॥ नमसत्वं प्रमाथे ॥ नमसत्वं अगंजे ॥ नमसत्वं अभंजे॥६५॥

नमसत्वं अकाले ॥ नमसत्वं अपाले ॥
नमो सरब देसे ॥ नमो सरब भेसे ॥६६॥
नमो राज राजे ॥ नमो साज साजे ॥
नमो शाह शाहे ॥ नमो माह माहे॥६७॥
नमो गीत गीते ॥ नमो प्रीत प्रीते ॥
नमो रोख रोखे॥ नमो सोख सोखे॥६८॥
नमो सरब रोगे ॥ नमो सरब भोगे ॥
नमो सरब जीतं॥ नमो सरब भीतं॥६९॥
नमो सरब गिआनं ॥ नमो परम तानं ॥
नमो सरब मंत्रं ॥ नमो सरब जंत्रं॥७०॥
नमो सरब द्रस्सं ॥ ननो सरब क्रस्सं ॥
नमो सरब रंगे ॥ त्रिभंगी अनंगे ॥७१॥
नमो जीव जीवं ॥ नमो बीज बीजे ॥
अखिज्जे अभिज्जे ॥ समसतं

प्रसिज्जे ॥७२॥ क्रिपालं सरूपे कुकरमं प्रणासी ॥ सदा सरबदा रिद्धि सिद्धं निवासी ॥७३॥

चरपट छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

अम्रित करमे ॥ अम्रित धरमे ॥ अखल्ल जोगे॥ अचल्ल भोगे॥७४॥ अचल्ल राजे॥ अटल्ल साजे ॥ अखल्ल धरमं ॥ अलक्ख करमं॥७५॥ सरबं दाता॥सरबं गिआता॥ सरबं भाने ॥ सरबं माने ॥७६॥ सरबं प्राणं ॥ सरबं त्राणं॥ सरबं भुगता॥ सरबं जुगता ॥७७॥ सरबं देवं ॥ सरबं भेवं ॥ सरबं काले ॥ सरबं पाले ॥७८॥

रूआल छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

आदि रूप अनादि मूरति अजोनि पुरख

अपार ॥ सरब मान त्रिमान देव अभेव आदि उदार ॥ सरब पालक सरब घालक सरब को पुनि काल ॥ जत्र तत्र विराजही अवधूत रूप रसाल॥७६॥नाम ठाम न जाति जाकर रूप रंग न रेख ॥ आदि पुरख उदार मूरति अजोनि आदि असेख ॥ देस और न भेस जाकर रूप रेख न राग॥ जत्र तत्र दिसा विसा हुइ फैलिओ अनुराग ॥८०॥ नाम काम बिहीन पेखत धाम हू नहि जाहि ॥ सरब मान सरबत्र मान सदैव मानत ताहि ॥ एक मूरति अनेक दरसन कीन रूप अनेक ॥ खेल खेल अखेल खेलन अंत को फिरि एक ॥८१॥ देव भेव न

जानही जिह वेद अउर कतेब ॥ 'रूप रंग न जाति पाति सु जानई किंह जेब ॥ तात मात न जात जाकर जनम मरन बिहीन ॥ चक्र बक्र फिरै चतुर चक मानही पुर तीन ॥८२॥ लोक चौदह के बिखै जग जापही जिह जाप ॥ आदि देव अनादि मूरति थापिओ सबै जिह थापि ॥ परम रूप पुनीत मूरति पूरन पुरख अपार॥ सरब बिस्व रचिओ सुयं-भव गड़न भंजनहार ॥८३॥ कालहीन कला संजुगति अकाल पुरख अदेस ॥ धरम धाम सु भरम रहित अभूत अलख अभेस ॥ अंग राग न रंग जाकहि जाति पाति न नाम ॥ गरब गंजन दुसट

भंजन मुकति दाइक काम ॥८४॥ आप रूप अमीक अन उसतति एक पुरख अवधूत ॥ गरब गंजन सरब भंजन आदि रूप असूत ॥ अंग हीन अभंग अनातम एक पुरख अपार ॥ सरब लाइक सरब घाइक सरब को प्रतिपार ॥८५॥ सरब गंता सरब हंता सरब ते अनभेख ॥ सरब सास्त्र न जानही जिह रूप रंगु अरु रेख ॥ परम बेद पुराण जाकहि नेत भाखत नित्त ॥ कोटि सिंमृत पुरान सास्त्र न आवई वहु चित्त ॥८६॥

मधुभार छद ॥ त्व प्रसादि ॥

गुन गन उदार ॥ महिमा अपार ॥

आसन अभंग ॥ उपमा अनंग ॥८७॥
अनभउ प्रकास ॥ निसदिन अनास ॥
आजान बाह ॥ साहान साह ॥८८॥
राजान राज ॥ भानान भान ॥
देवान देव ॥ उपमा महान ॥८९॥
इंद्रान इंद्र ॥ बालान बाल ॥ रंकान
रंक ॥ कालान काल ॥९०॥ अनभूत
अंग ॥ आभा अभंग ॥ गति मिति
अपार ॥ गुन गन उदार ॥९१॥
मुनि गन प्रनाम ॥ निरभै निकाम ॥
अति दुति प्रचंड ॥ मिति गति
अखंड ॥९२॥ आलिस्य करम ॥
आदस्य धरम ॥ सरबा भरणाढय ॥
अनडंड बाढय ॥९३॥

चाचरी छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

गुबिंदे ॥ मुकंदे ॥ उदारे ॥ अपारे॥६४॥
हरीअं ॥ करीअं॥ निरनामे॥ अकामे॥६५॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

चतर चक्र करता ॥ चतर चक्र हरता ॥
चतर चक्र दाने ॥ चतर चक्र जाने॥६६॥
चतर चक्र वरती ॥ चतर चक्र भरती ॥
चतर चक्र पाले ॥ चतर चक्र काले ॥६७॥
चतर चक्र पासे ॥ चतर चक्र वासे ॥
चतर चक्र मानयै॥ चतर चक्र दानयै॥६८॥

चाचरी छंद ॥

न सत्रै ॥ न मित्रै ॥ न भरमं ॥ न
भित्रै ॥ ६६ ॥ न करमं ॥ न काए ॥
अजनमं ॥ अजाए ॥१००॥ न चित्रै ॥

न मित्रै ॥ परे हैं पवित्रै ॥ १०१ ॥
पृथीसै ॥ अदीसै ॥ अदसै ॥
अकृसै ॥१०२॥

भगवती छंद ॥ त्व प्रसादि कथते ॥

कि आछिज्ज देसै ॥ कि आभिज्ज भेसै॥
कि आगंज्ज करमै ॥ कि आभंज्ज
भरमै ॥१०३॥ कि आभिज्ज लोकै ॥
कि आदित्त सोकै ॥ कि अवधूत वरनै ॥
कि बिभूत करनै ॥१०४॥ कि राजं
प्रभा हैं ॥ कि धरमं धुजा हैं ॥ कि
आसोक वरनै ॥ कि सरबा
अभरनै ॥१०५॥ कि जगतं कृती हैं ॥
कि छत्रं छत्री हैं ॥ कि ब्रह्मं सरूपै ॥
कि अनभउ अनूपै ॥१०६॥ कि आदि

अदेव हैं ॥ कि आपि अभेव हैं ॥ कि
चित्रं विहीनै ॥ कि एकै अधीनै ॥१०७॥
कि रोजी रजाकै ॥ रहीमै रिहाकै ॥ कि
पाक बिऐब हैं ॥ कि गैबुल गैब
हैं ॥१०८॥ कि अफूअल गुनाह हैं ॥
कि शाहान शाह हैं ॥ कि कारन कुनिंद
हैं ॥ कि रोजी दिहद हैं ॥१०९॥ कि
राजक रहीम हैं ॥ कि करमं करीम हैं ॥
कि सरबं कली हैं ॥ कि सरबं दली
हैं ॥११०॥ कि सरबत्र मानियै ॥ कि
सरबत्र दानियै ॥ कि सरबत्र गउनै ॥
कि सरबत्र भउनै ॥१११॥ कि सरबत्र
देसै ॥ कि सरबत्र भेसै ॥ कि सरबत्र
राजै ॥ कि सरबत्र साजै ॥११२॥ कि

सरवत्र दीनै ॥ कि सरवत्र लीनै ॥ कि
सरवत्र जाहो॥ कि सरवत्र भाहो॥११३॥
कि सरवत्र देसै॥ कि सरवत्र भेसै ॥ कि
सरवत्र कालै॥ कि सरवत्र पालै ॥११४॥
कि सरवत्र हंता ॥ कि सरवत्र गंता ॥ कि
सरवत्र भेखी॥ कि सरबत्र पेखी॥११५॥
कि सरवत्र काजै ॥ कि सरवत्र राजै ॥
कि सरवत्र सोखै ॥ कि सरवत्र
पोखै ॥११६॥ कि सरवत्र त्राणै ॥ कि
सरवत्र प्राणै ॥ कि सरवत्र देसै ॥ कि
सरवत्र भेसै ॥११७॥ कि सरवत्र
मानियैं ॥ सदैवं प्रधानियैं ॥ कि सरवत्र
जापियै ॥ कि सरवत्र थापियै ॥११८॥
कि सरवत्र भानै ॥ कि सरवत्र मानै ॥

कि सरवत्र इंद्रै॥ कि सरवत्र चंद्रै॥११९॥
कि सरबं कलीमै॥ कि परमं फहीमै॥
कि आकल अलामै॥ कि साहिब
कलामै॥१२०॥ कि हुसनल वजू हैं॥
तमामुल रुजू हैं॥ हमेसुल सलामैं॥
सलीखत मुदामैं॥१२१॥ गनीमुल
शिकसतै॥ गरीबुल परसतै॥ बिलंदुल
मकानैं॥ जमीनुल जमानैं॥१२२॥
तमीजुल तमामैं॥ रुजूअल निधानैं॥
हरीफुल अजीमैं॥रजाइक यकीनैं॥१२३॥
अनेकुल तरंग हैं॥ अभेद हैं अभंग हैं॥
अजीजुल निवाज हैं॥ गनीमुल खिराज
हैं॥१२४॥ निरुकत सरूप हैं॥ त्रिमुकति
बिभूत हैं॥ प्रभुगति प्रभा हैं॥ सुजुगति

सुधा हैं ॥१२५॥ सदैवं सरूप हैं ॥
अभेदी अनूप हैं ॥ समसतोपराज हैं ॥
सदा सरब साज हैं ॥१२६॥ समसतुल
सलाम हैं ॥ सदैवल अकाम हैं ॥
निरबाध सरूप हैं ॥ अगाध हैं अनूप
हैं ॥१२७॥ ओअं आदि रुपे ॥ अनादि
सरूपै ॥ अनंगी अनामे ॥ त्रिभंगी
त्रिकामे ॥१२८॥ त्रिबरगं त्रिबाधे ॥
अगंजे अगाधे ॥ सुभं सरब भागे ॥
सु सरबा अनुरागे ॥१२९॥ त्रिभुगत
सरुप हैं ॥ अछिज्ज हैं अछूत हैं ॥ कि
नरकं प्रणास हैं ॥ पृथीउल प्रवास
हैं ॥१३०॥ निरुकति प्रभा हैं ॥ सदैवं
सदा हैं ॥ बिभुगति सरूप हैं ॥ प्रजुगति

अनूप है ॥१३१॥ निरुकति सदा हैं ॥ विसुगति प्रभा हैं ॥ अनउकति सरूप हैं ॥ प्रजुगति अनूप हैं ॥१३२॥

चाचरी छंद ॥

अभग हैं॥ अनग हैं॥ अभेख हैं॥ अलेख है ॥१३३॥ अभरम है ॥ अकरम हैं ॥ अनादि हैं ॥ जुगादि हैं॥१३४॥ अजै हैं॥ अबै हैं॥ अभूत हैं॥ अधूत हैं ॥१३५॥ अनास हैं॥ उदास हैं॥ अधंध हैं॥ अबंध हैं ॥१३६॥ अभगत हैं॥ बिरकत हैं॥ अनास हैं॥ प्रकास हैं ॥१३७॥ निचिंत हैं॥ सुनित हैं॥ अलिक्ख हैं॥ अदिक्ख हैं ॥१३८॥ अलेख हैं॥ अभेख हैं॥

अढाह हैं॥ अगाह हैं॥१३६॥ असंभ हैं॥ अगंभ हैं॥अनील हैं॥ अनादि हैं॥१४०॥ अनित्त है॥ सुनित्त हैं॥ अजात हैं॥ अजाद हैं॥१४१॥

चरपट छंद॥ त्व प्रसादि॥

सरबं हंता॥ सरबं गंता॥ सरबं खिआता॥ सरबं गिआता॥१४२॥ सरबं हरता॥ सरबं करता॥ सरबं प्राणं॥ सरबं त्राणं॥१४३॥ सरबं करमं॥ सरबं धरमं॥ सरबं जुगता॥ सरबं मुकता॥१४४॥

रसावल छंद॥ त्व प्रसादि॥

नमो नरक नासे॥ सदैवं प्रकासे॥ अनंगं सरूपे॥ अभंगं बिभूते॥१४५॥

प्रमायं प्रमाये ॥ सदा सरब साथे ॥
अगाध सरूपे॥ निरबाध बिभूते॥१४६॥
अनंगी अनामे ॥ त्रिभंगी त्रिकामे ॥
निरभंगी सरूपे॥ सरबंगी अनूपे॥१४७॥
न पोत्रै न पुत्रै ॥ न सत्रै न मित्रै ॥ न
तातै न मातै ॥ न जातै न पातै॥१४८॥
निरसाकं सरीक हैं ॥ अमितो अमीक
हैं ॥ सदैवं प्रभा हैं ॥ अजै हैं अजा
हैं ॥१४९॥

भगवती छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

कि जाहर जहूर हैं ॥ कि हाजर हजूर
हैं ॥ हमेसुल सलाम हैं ॥ समसतुल
कलाम हैं ॥१५०॥ कि साहिब दिमाग
है ॥ कि हुसनल चराग हैं ॥ कि कामल

करीम है ॥ कि राजक रहीम हैं ॥१५१॥
कि रोजी दिहिंद हैं ॥ कि राजक रहिंद
हैं ॥ करीमुल कमाल हैं ॥ कि हुसनल
जमाल हैं ॥१५२॥ गनीमुल खिराज
हैं ॥ गरीबुल निवाज हैं ॥ हरीफुल
शिकंन हैं ॥ हिरासुल फिकंन हैं॥१५३॥
कलंकं प्रणास हैं ॥ समसतुल निवास
हैं ॥ अगंजुल गनीम हैं ॥ रजाइक
रहीम हैं ॥१५४॥ समसतुल जुबां हैं ॥
कि साहिब किरां हैं ॥ कि नरकं प्रणास
हैं ॥ बहिसतुल निवास हैं ॥१५५॥ कि
कि सरबुल गवंन हैं ॥ हमेसुल रवंन
हैं ॥ तमामुल तमीज हैं ॥ समसतुल
अजीज हैं ॥१५६॥ परं परम ईस हैं ॥

समसतुल अदीस है ॥ अदेसुल अलेख हैं ॥ हमेसुल अभेख हैं ॥१५७॥
ज़मीनुल जमा हैं ॥ अमीकुल इमा हैं ॥ करीमुल कमाल हैं ॥ कि जुरअति जमाल हैं ॥१५८॥ कि अचलं प्रकास हैं ॥ कि अमितो सुवास हैं ॥ कि अजब सरूप हैं॥ कि अमितो विभूत हैं॥१५९॥
कि अमितो पसा हैं ॥ कि आतम प्रभा हैं ॥ कि अचलं अनंग हैं ॥ कि अमितो अभंग हैं ॥१६०॥

मधुभार छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

मुनि मनि प्रनाम ॥ गुनि गन मुदाम ॥
अरि बर अगंज॥ हरि नर प्रभंज॥१६१॥
अन गन प्रनाम ॥ मुनि मनि सलाम ॥

हरि नर अखंड॥ वर नर अमंड॥१६२॥
अनभव अनास ॥ मुनि मनि प्रकास ॥
गुनि गन प्रनाम ॥ जल थल
मुदाम ॥ १६३ ॥ अनछिज्ज अंग ॥
आसन अभंग ॥ उपमा अपार ॥ गति
मिति उदार ॥१६४॥ जल थल अमंड॥
दिस विस अभंड ॥ जल थल महंत ॥
दिस विस बिअंत ॥ १६५ ॥ अनभव
अनास ॥ धृत धर धुरास ॥ आजान
बाहु ॥ एकै सदाहु ॥१६६॥ ओअंकार
आदि ॥ कथनी अनादि ॥ खल खंड
खिआल ॥ गुरबर अकाल ॥१६७॥
घर घरि प्रनाम ॥ चित चरन नाम ॥
अनछिज्ज गात ॥ आजिज न

बात ॥१६८॥ अनभंभ गात ॥ अनरंज बात ॥ अनटुट भंडार ॥ अनठट अपार ॥१६९॥ आडीठ धरम ॥ अति ढीठ करम ॥ अणवृण अनंत ॥ दाता महंत ॥१७०॥

हरिबोलमना छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

करुणालय हैं ॥ अरि घालय हैं ॥ खल खंडन हैं ॥ महि मंडन हैं ॥१७१॥ जगतेस्वर हैं ॥ परमेस्वर हैं ॥ कलि कारण हैं ॥ सरब उबारण हैं ॥१७२॥ धृत के धरण हैं ॥ जग के करण हैं ॥ मन मानिय हैं॥ जग जानिय हैं ॥१७३॥ सरबं भर हैं ॥ सरबं कर हैं॥ सरब पासिय हैं ॥ सरब नासिय हैं ॥१७४॥

करुणाकर हैं ॥ बिस्वंभर हैं ॥ सरबेस्वर जगतेस्वर हैं॥१७५॥ ब्रह्मंडस हैं ॥ खल खंडस हैं ॥ पर ते पर हैं ॥ करुणाकर हैं ॥१७६॥ अजपाजप हैं ॥ अथपाथप हैं ॥ अकृता कृत हैं ॥ अंमृता मृत हैं ॥१७७॥ अमृता मृत हैं ॥ करुणा कृत हैं ॥ अकृता कृत हैं ॥ धरणी धृत हैं ॥१७८॥ अमृतेस्वर हैं॥ परमेस्वर हैं ॥ अकृता कृत हैं ॥ अमृता मृत हैं ॥१७९॥ अजबा कृत हैं ॥ अमृता अमृत हैं ॥ नर नाइक हैं ॥ खल घाइक हैं ॥१८०॥ बिस्वंभर हैं ॥ करुणालय नृप नाइक हैं ॥ सरब पाइक हैं ॥१८१॥ भव भंजन हैं ॥ अरि गंजन हैं ॥ रिपु

तापन है ॥ जपु जापन है ॥१८२॥
अकलं कृत हैं ॥ सरबा कृत है ॥ करता
कर हैं ॥ हरता हरि हैं ॥१८३॥
परमातम हैं ॥ सरबातम हैं ॥ आतम
बस है ॥ जस के जस हैं ॥१८४॥

भुजग प्रयात छंद ।'

नमो सूरज सूरजे नमो चंद्र चंद्रे ॥
नमो राज राजे नमो इंद्र इंद्रे ॥
नमो अंधकारे नमो तेज तेजे ॥
नमो बृंद बृंदे नमो बीज बीजे ॥१८५॥
नमो राजसं तामसं सांत रूपे ॥
नमो परम तत्तं अतत्तं सरूपे ॥
नमो जोग जोगे नमो गिआन गिआने ॥
नमो मंत्र मंत्रे नमो धिआन

धिआने ॥१८६॥ नमो जुद्ध जुद्धे नमो गिआन गिआने ॥ नमो भोज भोजे नमो पान पाने ॥ नमो कलह करता नमो सांत रूपे ॥ नमो इंद्र इंद्रे अनादं बिभूते ॥१८७॥ कलंकार रूपे अलंकार अलंके ॥ नमो आस आसे नमो बांक बंके ॥ अभंगी सरूपे अनंगी अनामे ॥ त्रिभंगी त्रिकाले अनंगी अकामे ॥१८८॥

एक अछरी छंद ॥

अजै ॥ अलै ॥ अभै ॥ अबै ॥१८९॥ अभू ॥ अजू ॥ अनास॥ अकास॥१९०॥ अगंज ॥ अभंज ॥ अलक्ख ॥ अभक्ख ॥१९१॥ अकाल ॥ दिआल ॥ अलेख ॥ अभेख ॥१९२॥ अनाम ॥

अकाम ॥ अगाह ॥ अढाह ॥१६३॥
अनाथे ॥ प्रमाथे ॥ अजोनी ॥
अमोनी ॥१६४॥ न रागे ॥ न रंगे ॥
न रूपे ॥ न रेखे ॥१६५॥ अकरमँ ॥
अभरमँ ॥ अगॅजे ॥ अलेखे ॥१६६॥

भुजग प्रयात छंद ॥

नमसतुल प्रणामे समसतुल प्रणासे ॥
अगंजुल अनामे समसतुल निवासे ॥
निरकामं त्रिभूते समसतुल सरूपे ॥
कुकरमं प्रणासी सुधरमं त्रिभूते ॥१६७॥
सदा सच्चिदानंद सत्रं प्रणासी ॥
करीमुल कुनिंदा समसतुल निवासी ॥
अजाइब त्रिभूते गजाइब गनीमे ॥
हरीअं करीअं करीमुल रहीमे ॥१६८॥

चतर चक्र वरती चतर चक्र भुगते ॥
सुयंभव सुभं सरबदा सरब जुगते ॥
दुकालं प्रणासी दिआलं सरूपे ॥
सदा अंग संगे अभंगं बिभूते ॥१६६॥



१ ओं

त्वप्रसादि सवय्ये

१ ओं वाहिगुरु जी की फतह ॥

त्वप्रसादि सवय्ये

स्रावग सुद्ध समूह सिद्धान के देखि फिरिओ घर जोग जती के ॥ सूर सुरारदन सुद्ध सुधादिक संत समूह अनेक मती के ॥ सारे ही देस को देखि रहिओ मत कोऊ न देखीअत प्रानपती के ॥ श्री भगवान की भाइ कृपा हू ते एक रती बिनु एक रती के ॥१॥

माते मतंग जरे जर संग अनूप उतंग सुरंग सवारे ॥ कोट तुरंग कुरंग से कूदत पउन के गउन को जात निवारे ॥ भारी भुजान के भूप भली

बिधि निआवत सीस न जात बिचारे॥ एते भए तु कहा भए भूपति अंत को नांगे ही पांइ पधारे॥२॥

जीत फिरै सब देस दिसान को बाजत ढोल मृदंग नगारे॥ गुंजत गूड़ गजान के सुंदर हिंसत हैं हयराज हजारे॥ भूत भविक्ख भवान के भूपत कउनु गनै नहीं जात बिचारे॥ श्री पति श्री भगवान भजे बिनु अंत को अंत के धाम सिधारे॥३॥

तीरथ नान दइआ दम दान सु संजम नेम अनेक बिसेखे॥ बेद पुरान कतेब कुरान जमीन जमान सबान के पेखे॥ पउन अहार जती जत धार सबै

सु बिचार हजार क देखे॥ श्री भगवान भजे बिनु भूपति एक रती बिनु एक न लेखे ॥४॥

सुद्ध सिपाह दुरंत दुबाह सु साज सनाह दुरजान दलैंगे॥ भारी गुमान भरे मन मै कर परबत पख हले न हलैंगे॥ तोरि अरीन मरोरि मवासन माते मतंगनि मान मलैंगे॥ श्री पति श्री भगवान कृपा बिनु तिआगि जहान निदान चलैंगे ॥५॥

बीर अपार बडे बरआर अबिचारहि सार की धार भछय्या॥ तोरत देस मलिंद मवासन माते गजान के मान मलय्या॥ गाढे गढान को तोड़न हार

सु बातन हीं चक चार लवय्या ॥ साहिबु श्री सभ को सिरनाइक जाचक अनेक सु एक दिवय्या ॥६॥

दानव देव फनिंद निसाचर भूत भविक्खं भवान जपैंगे ॥ जीव जिते जल मै थल मै पल ही पल मै सब थाप थपैंगे ॥ पुंन प्रतापन बाढ जयति धुन पापन के बहु पुंज खपैंगे ॥ साध समूह प्रसंन फिरै जग सत्र सभै अवलोक चपैंगे ॥७॥

मानव इंद्र गजिंद्र नराधप जौन त्रिलोक को राज करैंगे ॥ कोटि सनान गजादिक दान अनेक सुअंबर साज बरैंगे ॥ ब्रहम महेसर बिसन सचीपति

अंत फसे जम फास परैंगे ॥ जे नर श्रीपति के परसहैं पग ते नर फेर न देह धरैंगे ॥८॥

कहा भयो जो दोऊ लोचन मूंद कै बैठि रहिओ बक धिआन लगाइओ ॥ न्हात फिरिओ लीए सात समुद्रनि लोक गयो परलोक गवाइओ ॥ बास कीओ बिखिआन सों बैठ कै ऐसे ही ऐसे सु बैस बिताइओ ॥ साचु कहों सुन लेहु सभै जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ ॥९॥

काहू लै पाहन पूज धरयो सिर काहू लै लिंग गरे लटकाइओ ॥ काहू लखिओ हरि अवाची दिसा महि काहू

पछाह को सीसु निवाइओ ॥ कोऊ बुतान को पूजत है पसु कोऊ मृतान को पूजन धाइओ ॥ क्रूर क्रिआ उरझिओ सभही जग श्री भगवान को भेदु न पाइओ ॥१०॥



१ ओं

अनंदु साहिब



रामकली महला ३

अनंदु

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ ॥ सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥ राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ ॥ सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइआ ॥ कहै नानकु अनंदु होआ सतिगुरू मै पाइआ ॥१॥ ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥ हरि नालि रहु तू मंन मेरे दूख सभि

विसारणा ॥ अंगीकारु ओहु करे तेरा
कारज सभि सवारणा ॥ सभना गला
समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥
कहै नानकु मंन मेरे सदा रहु हरि
नाले ॥२॥ साचे साहिबा किआ नाही
घरि तेरै ॥ घरि त तेरै सभु किछु है
जिसु देहि सु पावए ॥ सदा सिफति
सलाह तेरी नामु मनि वसावए ॥ नामु
जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥
कहै नानकु सचे साहिब किआ नाही
घरि तेरै ॥ ३ ॥ साचा नामु मेरा
आधारो ॥ साचु नामु अधारु मेरा
जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥ करि सांति
सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि

रामकली महला ३

अनंदु

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ ॥ सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥ राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ ॥ सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइआ ॥ कहै नानकु अनंदु होआ सतिगुरू मै पाइआ ॥१॥ ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥ हरि नालि रहु तू मंन मेरे दूख सभि

विसारणा ॥ अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥ सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥ कहै नानकु मंन मेरे सदा रहु हरि नाले ॥२॥ साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ॥ घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ॥ सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए ॥ नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥ कहै नानकु सचे साहिब किआ नाही घरि तेरै ॥ ३ ॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥ साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥ करि सांति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि

पुजाइआ ॥ सदा कुरबाणु कीता गुरू विटहु जिस दीआ एहि वडिआईआ ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु सबदि धरहु पिआरो ॥ साचा नामु मेरा आधारो॥४॥ वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै ॥ घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ ॥ पंच दूत तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ ॥ धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ॥ कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे ॥ ५ ॥ साची लिवै बिनु देह निमाणी ॥ देह निमाणी लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥ तुधु बाझु समरथ कोइ नाही क्रिपा करि

बनवारीआ ॥ एस नउ होरु थाउ नाही सबदि लागि सवारीआ ॥ कहै नानकु लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥६॥ आनंदु आनंदु सभु को कहै आनंदु गुरु ते जाणिआ ॥ जाणिआ आनंदु सदा गुर ते क्रिपा करे पिआरिआ ॥ करि किरपा किलविख कटे गिआन अंजनु सारिआ ॥ अंदरहु जिन का मोहु तुटा तिन का सबदु सचै सवारिआ ॥ कहै नानकु एहु अनंदु है आनंदु गुर ते जाणिआ ॥७॥ बाबा जिसु तू देहि सोई जनु पावै ॥ पावै त सो जनु देहि जिस नो होरि किआ करहि वेचारिआ ॥ इक भरमि भूले फिरहि दह दिसि

इकि नामि लागि सवारिआ ॥ गुर परसादी मनु भइआ निरमलु जिना भाणा भावए ॥ कहै नानकु जिसु देहि पिआरे सोई जनु पावए ॥ ८ ॥ आवहु संत पिआरिहो अकथ की करह कहाणी ॥ करह कहाणी अकथ केरी कितु दुआरै पाईऐ ॥ तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ हुकमि मंनिऐ पाईऐ ॥ हुकमु मंनिहु गुरू केरा गावहु सची बाणी ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु कथिहु अकथ कहाणी ॥९॥ ए मन चंचला चतुराई किनै न पाइआ ॥ चतुराई न पाइआ किनै तू सुणि मंन मेरिआ ॥ एह माइआ मोहणी जिनि एतु भरमि

भुलाइआ ॥ माइआ त मोहणी तिनै कीती जिनि ठगउली पाईआ ॥ कुरबाणु कीता तिसै विटहु जिनि मोहु मीठा लाइआ ॥ कहै नानकु मन चंचल चतुराई किनै न पाइआ ॥१०॥ ए मन पिआरिआ तू सदा सचु समाले ॥ एहु कुटंबु तू जि देखदा चलै नाही तेरै नाले ॥ साथि तेरै चलै नाही तिसु नालि किउ चितु लाईऐ ॥ ऐसा कंमु मूले न कीचै जितु अंति पछोताईऐ ॥ सतिगुरू का उपदेसु सुणि तू होवै तेरै नाले ॥ कहै नानकु मन पिआरे तू सदा सचु समाले ॥११॥ अगम अगोचरा तेरा अंतु न पाइआ ॥ अंतो न पाइआ किनै

तेरा आपणा आपु तू जाणहे ॥ जीअ जत सभि खेलु तेरा किआ को आखि वखाणए ॥ आखहि त वेखहि सभु तूहै जिनि जगतु उपाइआ ॥ कहै नानकु तू सदा अगंमु है तेरा अंतु न पाइआ॥१२॥ सुरि नर मुनि जन अंमृतु खोजदे सु अंमृतु गुर ते पाइआ ॥ पाइआ अंमृतु गुरि कृपा कीनी सचा मनि वसाइआ ॥ जीअ जंत सभि तुधु उपाए इकि वेखि परसणि आइआ ॥ लबु लोभु अहंकारु चूका सतिगुरू भला भाइआ ॥ कहै नानकु जिस नो आपि तुठा तिनि अंमृतु गुरु ते पाइआ ॥१३॥ भगता की चाल निराली ॥ चाला निराली भगताह केरी

बिखम मारगि चलणा ॥ लबु लोभु अहंकारु तजि तृसना बहुतु नाही बोलणा ॥ खंनिअहु तिखी वालहु निकी एतु मारगि जाणा ॥ गुर परसादी जिनी आपु तजिआ हरि वासना समाणी ॥ कहै नानकु चाल भगता जुगहु जुगु निराली ॥१४॥ जिउ तू चलाइहि तिव चलह सुआमी होरु किआ जाणा गुण तेरे ॥ जिव तू चलाइहि तिवै चलह जिना मारगि पावहे ॥ करि किरपा जिन नामि लाइहि सि हरि हरि सदा धिआवहे ॥ जिसनो कथा सुणाइहि आपणी सि गुर दुआरै सुखु पावहे ॥ कहै नानकु सचे साहिब जिउ

भावै तिवै चलावहे ॥१५॥ एहु सोहिला सबदु सुहावा ॥ सबदो सुहावा सदा सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ॥ एहु तिन कै मंनि वसिआ जिन धुरहु लिखिआ आइआ ॥ इकि फिरहि घनेरे करहि गला गली किनै न पाइआ ॥ कहै नानकु सबदु सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ॥१६॥ पवितु होए से जना जिनी हरि धिआइआ ॥ हरि धिआइआ पवितु होए गुरमुखि जिनी धिआइआ ॥ पवितु माता पिता कुटंब सहित सिउ पवितु संगति सबाईआ ॥ कहदे पवितु सुणदे पवितु से पवितु जिनी मंनि वसाइआ ॥ कहै नानकु से पवितु जिनी

गुरमुखि हरि हरि धिआइआ ॥१७॥
करमी सहजु न ऊपजै विणु सहजै सहसा न जाइ ॥ नह जाइ सहसा कितै संजमि रहे करम कमाए ॥ सहसै जीउ मलीणु है कितु संजमि धोता जाए॥ मंनु धोवहु सबदि लागहु हरि सिउ रहहु चितु लाइ ॥ कहै नानकु गुर परसादी सहजु उपजै इहु सहसा इव जाइ ॥१८॥ जीअहु मैले बाहरहु निरमल ॥ बाहरहु निरमल जीअहु त मैले तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥ एह तिसना वडा रोगु लगा मरणु मनहु विसारिआ ॥ वेदा महि नामु उतमु सो सुणहि नाही फिरहि जिउ बेतालिआ ॥ कहै नानकु जिन सचु

तजिआ कूड़े लागे तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥१६॥ जीअहु निरमल बाहरहु निरमल॥ बाहरहु त निरमल जीअहु निरमल सतिगुर ते करणी कमाणी॥ कूड़ की सोइ पहुचै नाही मनसा सचि समाणी ॥ जनमु रतनु जिनी खटिआ भले से वणजारे॥ कहै नानकु जिन मंनु निरमलु सदा रहहि गुर नाले॥२०॥ जे को सिखु गुरू सेती सनमुखु होवै॥ होवै त सनमुखु सिखु कोई जीअहु रहै गुर नाले॥ गुर के चरन हिरदै धिआए अंतर आतमै समाले॥ आपु छडि सदा रहै परणै गुर बिनु अवरु न जाणै कोए॥ कहै

नानकु सुणहु संतहु सो सिखु सनमुखु होए ॥२१॥ जे को गुर ते वेमुखु होवै विनु सतिगुर मुकति न पावै ॥ पावै मुकति न होरथै कोई पुछहु विवेकीआ जाए ॥ अनेक जूनी भरमि आवै विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥ फिरि मुकति पाए लागि चरणी सतिगुरू सबदु सुणाए ॥ कहै नानकु वीचारि देखहु विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥२२॥ आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥ बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिरि बाणी ॥ जिन कउ नदरि करमु होवै हिरदै तिना समाणी ॥ पीवहु अंमृतु सदा रहहु हरि

रंगि जपिहु सारिगपाणी ॥ कहै नानकु सदा गावहु एह सची वाणी ॥२३॥ सतिगुरू विना होर कची है वाणी ॥ वाणी त कची सतिगुरू बाझहु होर कची वाणी ॥ कहदे कचे सुणदे कचे कचीं आखि वखाणी ॥ हरि हरि नित करहि रसना कहिआ कछू न जाणी ॥ चितु जिन का हिरि लइआ माइआ बोलनि पए रवाणी ॥ कहै नानकु सतिगुरू बाझहु होर कची वाणी ॥२४॥ गुर का सबदु रतंनु है हीरे जितु जड़ाउ॥ सबदु रतनु जितु मंनु लागा एहु होआ समाउ ॥ सबद सेती मनु मिलिआ सचै लाइआ भाउ ॥ आपे हीरा रतनु आपे

जिसनो देइ बुझाइ ॥ कहै नानकु सबदु रतनु है हीरा जितु जड़ाउ ॥२५॥ सिव सकति आपि उपाइकै करता आपे हुकमु वरताए ॥ हुकमु वरताए आपि वेखै गुरमुखि किसै बुझाए ॥ तोड़े बंधन होवै मुकतु सबदु मंनि वसाए ॥ गुरमुखि जिसनो आपि करे सु होवै एकस सिउ लिवलाए ॥ कहै नानकु आपि करता आपे हुकमु बुझाए ॥२६॥ सिम्रिति सासत्र पुंन पाप बीचारदे ततै सार न जाणी ॥ ततै सार न जाणी गुरू बाझहु ततै सार न जाणी ॥ तिही गुणी संसारु भ्रमि सुता सुतिआ रैणि विहाणी ॥ गुर किरपा ते से जन जागे

जिना हरि मनि वसिआ बोलहि अंमृत
वाणी ॥ कहै नानकु सो ततु पाए जिस
नो अनदिनु हरि लिव लागै जागत रैणि
विहाणी ॥२७॥ माता के उदर महि
प्रतिपाल करे सो किउ मनहु विसारीऐ ॥
मनहु किउ विसारीऐ एवडु दाता जि
अगनि महि आहारु पहुचावए ॥
ओस नो किहु पोहि न सकी जिसनउ
आपणी लिव लावए ॥ आपणी लिव
आपे लाए गुरमुखि सदा समालीऐ ॥
कहै नानकु एवडु दाता सो किउ मनहु
विसारीऐ ॥२८॥ जैसी अगनि उदर
महि तैसी बाहरि माइआ ॥ माइआ
अगनि सभ इको जेही करतै खेलु

रचाइआ ॥ जा तिसु भाणा ता जंमिआ परवारि भला भाइआ ॥ लिव छुड़की लगी तृसना माइआ अमर वरताइआ ॥ एह माइआ जितु हरि विसरै मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ ॥ कहै नानकु गुर परसादी जिना लिव लागी तिनी विचे माइआ पाइआ ॥ २९ ॥ हरि आपि अमुलकु है मुलि न पाइआ जाइ ॥ मुलि न पाइआ जाइ किसै विटहु रहे लोक विललाइ ॥ ऐसा सतिगुरु जे मिलै तिसनो सिरु सउपीऐ विचहु आपु जाइ ॥ जिसदा जीउ तिसु मिलि रहै हरि वसै मनि आइ ॥ हरि आपि अमुलकु है भाग तिना के नानका जिन हरि पलै

पाइ ॥३०॥ हरि रासि मेरी मनु वणजारा ॥ हरि रासि मेरी मनु वणजारा सतिगुर ते रासि जाणी ॥ हरि हरि नित जपिहु जीअहु लाहा खटिहु दिहाड़ी ॥ एहु धनु तिना मिलिआ जिन हरि आपे भाणा ॥ कहै नानकु हरि रासि मेरी मनु होआ वणजारा ॥३१॥ ए रसना तू अनरसि राचि रही तेरी पिआस न जाइ ॥ पिआस न जाइ होरतु कितै जिचरु हरि रसु पलै न पाइ ॥ हरि रसु पाइ पलै पीऐ हरि रसु बहुड़ि न तृसना लागै आइ ॥ एहु हरि रसु करमी पाईऐ सतिगुरु मिलै जिसु आइ ॥ कहै नानकु होरि अन रस सभि वीसरे जा हरि

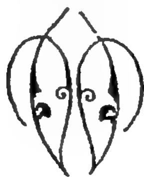
वसै मनि आइ ॥३२॥ ए सरीरा मेरिआ हरि तुम महि जोति रखी ता तू जग महि आइआ ॥ हरि जोति रखी तुधु विचि ता तू जग महि आइआ ॥ हरि आपे माता आपे पिता जिनि जीउ उपाइ जगतु दिखाइआ ॥ गुर परसादी बुझिआ ता चलतु होआ चलतु नदरी आइआ ॥ कहै नानकु स्रसटि का मूलु रचिआ जोति राखी ता तू जग महि आइआ ॥३३॥ मनि चाउ भइआ प्रभ आगमु सुणिआ ॥ हरि मंगलु गाउ सखी गृहु मंदरु बणिआ ॥ हरि गाउ मंगलु नित सखीए सोगु दूखु न विआपए ॥ गुर चरन लागे दिन सभागे

आपणा पिरु जापए ॥ अनहत वाणी
गुर सबदि जाणी हरिनामु हरि रसु
भोगो ॥ कहै नानकु प्रभु आपि मिलिआ
करण कारण जोगो ॥ ३४॥ ए सरीरा
मेरिआ इसु जग महि आइ कै किआ तुधु
करम कमाइआ ॥ कि करम कमाइआ
तुधु सरीरा जा तू जग महि आइआ ॥
जिनि हरि तेरा रचनु रचिआ सो हरि
मनि न वसाइआ ॥ गुर परसादी हरि
मंनि वसिआ पूरवि लिखिआ पाइआ ॥
कहै नानकु एहु सरीरु परवाणु होआ
जिनि सतिगुर सिउ चितु लाइआ ॥३५॥
ए नेत्रहु मेरिहो हरि तुम महि जोति
धरी हरि बिनु अवरु न देखहु कोई ॥

हरि विनु अवरु न देखहु कोई नदरी हरि निहालिआ ॥ एहु विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि का रूपु है हरि रूपु नदरी आइआ ॥ गुर परसादी बुझिआ जा वेखा हरि इकु है हरि विनु अवरु न कोई ॥ कहै नानकु एहि नेत्र अंध से सतिगुरि मिलिऐ दिब द्रसटि होई ॥३६॥ ए स्रवणहु मेरिहो साचै सुनणै नो पठाए ॥ साचै सुनणै नो पठाए सरीरि लाए सुणहु सति वाणी ॥ जितु सुणी मनु तनु हरिआ होआ रसना रसि समाणी ॥ सचु अलख विडाणी ताकी गति कही न जाए ॥ कहै नानकु अंम्रित नामु सुणहु पवित्र होवहु साचै सुनणै नो

पठाए ॥३७॥ हरि जीउ गुफा अंदरि रखिकै वाजा पवणु वजाइआ ॥ वजाइआ वाजा पउण नउ दुआरे परगटु कीए दसवा गुपतु रखाइआ ॥ गुर दुआरै लाइ भावनी इकना दसवा दुआरु दिखाइआ ॥ तह अनेक रूप नाउ नव निधि तिस दा अंतु न जाई पाइआ ॥ कहै नानकु हरि पिआरै जीउ गुफा अंदरि रखिकै वाजा पवणु वजाइआ ॥३८॥ एहु साचा सोहिला साचै घरि गावहु ॥ गावहु त सोहिला घरि साचै जिथै सदा सचु धिआवहे ॥ सचो धिआवहि जा तुधु भावहि गुरमुखि जिना बुझावहे ॥ इहु सचु सभना का

खसमु है जिसु बखसे सो जनु पावहे ॥
कहै नानकु सचु सोहिला सचै घरि
गावहे ॥३९॥ अनदु सुणहु वड
भागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥ पारब्रहमु
प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे ॥ दूख
रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥
संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥
सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ
भरपूरे ॥ बिनवंति नानकु गुर चरण
लागे वाजे अनहद तूरे ॥४०॥१॥



१ ओं

रहरासि

रहरासि

सो दरु रागु आसा महला १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥ वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे ॥ केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे ॥ गावनि तुधनो पवणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥ गावनि तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणनि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥ गावनि तुधनो ईसरु ब्रहमा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे॥

गावनि तुधनो इंद्र इंद्रासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ गावनि तुधनो सिध समाधी अंदरि गावनि तुधनो साध बीचारे ॥ गावनि तुधनो जती सती संतोखी गावनि तुधनो वीर करारे ॥ गावनि तुधनो पंडित पड़नि रिखीसुर जुगु जुगु वेदा नाले ॥ गावनि तुधनो मोहणीआ मनु मोहनि सुरगु मछु पइआले ॥ गावनि तुधनो रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥ गावनि तुधनो जोध महाबल सूरा गावनि तुधनो खाणी चारे ॥ गावनि तुधनो खंड मंडल ब्रहमंडा करि करि रखे तेरे धारे ॥ सेई तुधनो गावनि जो तुधु भावनि रते

तेरे भगत रसाले ॥ होरि केते तुधनो गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे ॥ सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥ रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥ करि करि देखै कीता आपणा जिउ तिसदी वडिआई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी फिरि हुकमु न करणा जाई ॥ सो पातिसाहु साहा पति साहिबु नानक रहणु रजाई ॥ १ ॥

आसा महला १ ॥

सुणि वडा आखै सभु कोइ ॥ केवडु वडा डीठा होइ ॥ कीमति पाइ न कहिआ

जाइ ॥ कहणै वाले तेरे रहे समाइ ॥१॥
वडे मेरे साहिबा गहिर गंभीरा गुणी
गहीरा ॥ कोइ न जाणै तेरा केता केवडु
चीरा ॥१॥ रहाउ ॥ सभि सुरती मिलि
सुरति कमाई ॥ सभ कीमति मिलि
कीमति पाई ॥ गिआनी धिआनी गुर
गुरहाई ॥ कहणु न जाई तेरी तिलु
वडिआई ॥ २ ॥ सभि सत सभि तप
सभि चंगिआईआ ॥ सिधा पुरखा
कीआ वडिआईआ ॥ तुधु विणु सिधी
किनै न पाईआ ॥ करमि मिलै नाही
ठाकि रहाईआ ॥ ३ ॥ आखण वाला
किआ वेचारा ॥ सिफती भरे तेरे
भंडारा ॥ जिसु तू देहि तिसै

किआ चारा ॥ नानक सचु सवारण हारा ॥४॥२॥

आसा महला १ ॥

आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥ आखणि अउखा साचा नाउ ॥ साचे नाम की लागै भूख ॥ उतु भूखै खाइ चलीअहि दूख ॥ १ ॥ सो किउ विसरै मेरी माइ ॥ साचा साहिबु साचै नाइ ॥१॥ रहाउ ॥ साचे नाम की तिलु वडिआई ॥ आखि थके कीमति नही पाई ॥ जे सभि मिलि कै आखण पाहि ॥ वडा न होवै घाटि न जाइ ॥२॥ ना ओहु मरै न होवै सोगु ॥ देदा रहै न चूकै भोगु ॥ गुणु एहो होरु नाही

कोइ ॥ ना को होआ ना को होइ ॥ ३ ॥ जेवडु आपि तेवड तेरी दाति ॥ जिनि दिनु करि कै कीती राति ॥ खसमु विसारहि ते कमजाति ॥ नानक नावै बाझु सनाति ॥४॥३॥

रागु गूजरी महला ४ ॥

हरि के जन सतिगुर सतपुरखा विनउ करउ गुर पासि ॥ हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि ॥१॥ मेरे मीत गुरदेव मो कउ राम नामु परगासि ॥ गुरमति नामु मेरा प्रानसखाई हरि कीरति हमरी रहरासि ॥१॥ रहाउ ॥ हरि जन के वड भाग वडेरे जिन हरि हरि सरधा हरि

पिआस ॥ हरि हरि नामु मिलै तृपतासहि मिलि संगति गुण परगासि ॥ २ ॥ जिन हरि हरि हरिरसु नामु न पाइआ ते भागहीण जम पासि ॥ जो सतिगुर सरणि संगति नही आए ध्रिगु जीवे ध्रिगु जीवासि ॥३॥ जिन हरि जन सतिगुर संगति पाई तिन धुरि मसतकि लिखिआ लिखासि ॥ धनु धंनु सतसंगति जितु हरिरसु पाइआ मिलि जन नानक नामु परगासि ॥४॥४॥

रागु गूजरी महला ५ ॥

काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥ सैल पथर महि जंत उपाए ता का रिजकु आगै करि

रागु आसा महला ४ सो पुरखु

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजनु हरि अगमा अगम अपारा ॥ सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा ॥ सभि जीअ तुमारे जी तूं जीआ का दातारा॥ हरि धिआवहु संतहु जी सभि दूख विसारणहारा ॥ हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी किआ नानक जंत विचारा ॥१॥ तू घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी हरि एको पुरखु समाणा ॥ इकि दाते इकि भेखारी जी सभि तेरे चोज विडाणा ॥ तूं

जासी ॥३॥ तेरी भगति तेरी भगति भंडार जी भरे बिअंत बेअंता॥ तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि तुधु जी हरि अनिक अनेक अनंता ॥ तेरी अनिक तेरी अनिक करहि हरि पूजा जी तपु तापहि जपहि बेअंता ॥ तेरे अनेक तेरे अनेक पड़हि बहु सिम्रिति सासत जी करि किरिआ खटु करम करंता ॥ से भगत से भगत भले जन नानक जी जो भावहि मेरे हरि भगवंता ॥ ४ ॥ तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता जी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ तूं जुगु जुगु एको सदा सदा तूं एको जी तूं निहचलु करता सोई ॥ तुधु आपे भावै सोई वरतै जी तूं आपे

कराहि सु होई ॥ तुधु आपे स्रसटि सभ
उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ गोई ॥
जनु नानकु गुण गावै करते के जी जो
सभसै का जाणोई ॥५॥१॥

आसा महला ४

तूं करता सचिआरु मैडा सांई ॥ जो
तउ भावै सोई थीसी जो तूं देहि सोई
हउ पाई ॥१॥ रहाउ ॥ सभ तेरी तूं
सभनी धिआइआ ॥ जिसनो क्रिपा करहि
तिन नाम रतनु पाइआ ॥ गुरमुखि
लाधा मनमुखि गवाइआ ॥ तुधु आपि
विछोड़िआ आपि मिलाइआ ॥ १ ॥
तूं दरिआउ सभ तुझही माहि ॥ तुझ
बिनु दूजा कोई नाहि ॥ जीअ जंत सभि

तेरा खेलु ॥ विजोगि मिलि विछुड़िआ सजोगी मेलु ॥२॥ जिस नो तू जाणाइहि सोई जनु जाणै ॥ हरिगुण सद ही आखि वखाणै ॥ जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥ सहजे ही हरिनामि समाइआ ॥ ३ ॥ तूं आपे करता तेरा कीआ सभु होइ ॥ तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥ जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ॥४॥२॥

आसा महला १

तितु सरवरड़ै भईले निवासा पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥ पंकजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले ॥१॥

मन एकु न चेतसि मूड़ मना ॥ हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥१ ॥रहाउ॥ ना हउ जती सती नही पड़िआ मूरख मुगधा जनमु भइआ ॥ प्रणवति नानक तिन की सरणा जिन तूं नाही वीसरिआ ॥२॥३॥

आसा महला ५ ॥

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥ गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥ अवरि काज तेरै कितै न काम ॥ मिलु साध संगति भजु केवल नाम ॥१॥ सरंजामि लागु भवजल तरन कै॥ जनमु बृथा जात रंगि माइआ कै ॥१॥ रहाउ ॥ जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ ॥

सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ॥ कहु नानक हम नीच करंमा ॥ सरणि परे की राखहु सरमा ॥२॥४॥

कबियोबाच बेनती ॥ चौपई ॥

हमरी करो हाथ दै रच्छा ॥ पूरन होइ चित की इच्छा ॥ तव चरनन मन रहै हमारा ॥ अपना जान करो प्रतिपारा ॥ १ ॥ हमरे दुसट सभै तुम घावहु ॥ आपु हाथ दै मोहि बचावहु ॥ सुखी बसै मोरो परिवारा ॥ सेवक सिक्ख सभै करतारा ॥२॥ मो रच्छा निज कर दै करियै ॥ सब वैरन कौ आज संघरियै ॥ पूरन होइ हमारी आसा ॥ तोर भजन की रहै

पिआसा ॥३॥ तुमहि छाडि कोई अवर न धियाऊं ॥ जो वर चहौं सु तुम ते पाऊं ॥ सेवक सिक्ख हमारे तारीअहि ॥ चुनि चुनि सत्र हमारे मारीअहि ॥४॥ आप हाथ दै मुझै उबरियै ॥ मरन काल का त्रास निवरियै॥ हूजो सदा हमारे पच्छा ॥ श्री असिधुज जू करियहु रच्छा ॥५॥ राखि लेहु मुहि राखनहारे ॥ साहिब संत सहाइ पियारे ॥ दीन बंधु दुसटन के हंता ॥ तुमहो पुरी चतुर दस कंता ॥६॥ काल पाइ ब्रहमा बपु धरा ॥ काल पाइ सिवजू अवतरा ॥ काल पाइ कर बिसनु प्रकासा ॥ सकल काल का कीआ

तमासा ॥७॥ जवन काल जोगी सिव कीओ॥ वेदराज ब्रहमा जू थीओ॥ जवन काल सभ लोक सवारा॥ नमसकार है ताहि हमारा ॥८॥ जवन काल सभ जगत बनायो॥ देव दैत जच्छन उपजायो॥ आदि अंति एकै अवतारा॥ सोई गुरू समझियहु हमारा॥९॥ नमसकार तिस ही को हमारी॥ सकल प्रजा जिन आप सवारी॥ सिवकन को सिवगुन सुख दीओ॥ सत्रुन को पल मो बध कीओ ॥१०॥ घट घट के अंतर की जानत॥ भले बुरे की पीर पछानत॥ चीटी ते कुंचर असथूला॥ सभ पर

कृपा द्रसटि कर फूला ॥११॥ संतन दुख पाए ते दुखी ॥ सुख पाए साधुन के सुखी ॥ एक एक की पीर पछानैं ॥ घट घट के पट पट की जानैं ॥१२॥ जब उदकरख करा करतारा ॥ प्रजा धरत तब देह अपारा ॥ जब आकरख करत हो कबहू ॥ तुम मै मिलत देह धर सभहू ॥१३॥ जेते बदन स्रसटि सभ धारै ॥ आपु आपनी बूझ उचारै ॥ तुम सभही ते रहत निरालम ॥ जानत बेद भेद अर आलम ॥१४॥ निरंकार निरबिकार निरलंभ ॥ आदि अनील अनादि असंभ ॥ ताका मूढ़ उचारत भेदा ॥ जाको भेव न पावत बेदा ॥१५॥

ताकौ करि पाहन अनुमानत ॥ महा मूढ़ कछु भेद न जानत ॥ महादेव कौ कहत सदा सिव ॥ निरंकार का चीनत नहि भिव ॥१६॥ आपु आपनी बुधि है जेती ॥ बरनत भिंन भिंन तुहि तेती॥ तुमरा लखा न जाइ पसारा ॥ किह बिधि सजा प्रथम संसारा ॥१७॥ एकै रूप अनूप सरूपा ॥ रंक भयो राव कही भूपा ॥ अंडज जेरज सेतज कीनी ॥ उतभुज खानि बहुर रचि दीनी ॥१८॥ कहूं फूल राजा ह्वै बैठा ॥ कहू सिमटि भयो संकर इकैठा ॥ सगरी सृसटि दिखाइ अचंभव ॥ आदि जुगादि सरुप सुयंभव ॥१९॥ अब रच्छा मेरी तुम

करो ॥ सिक्ख उबारि असिक्ख संघरो ॥
दुष्ट जिते उठवत उतपाता ॥ सकल
मलेछ करो रण घाता ॥२०॥ जे
असिधुज तव सरनी परे ॥ तिनके दुष्ट
दुखित ह्वै मरे ॥ पुरख जवन पग परे
तिहारे ॥ तिनके तुम संकट सब
टारे ॥२१॥ जो कलि को इक बार
धिऐ है ॥ ताके काल निकटि नहि
ऐहै ॥ रच्छा होइ ताहि सभ काला ॥
दुसट अरिसट टरें ततकाला ॥२२॥
कृपा दसटि तन जाहि निहरिहो ॥ ताके
ताप तनक मो हरिहो ॥ रिद्धि सिद्धि घर
मो सभ होई ॥ दुष्ट छाह छ्वै सकै न
कोई॥२३॥ एक बार जिन तुम संभारा॥

काल फास ते ताहि उबारा ॥ जिन नर नाम तिहारो कहा ॥ दारिद दुसट दोख ते रहा ॥२४॥ खड़ग केत मै सरणि तिहारी ॥ आप हाथ दै लेहु उबारी ॥ सरब ठौर मो होहु सहाई ॥ दुसट दोख ते लेहु बचाई ॥२५॥

स्वैया ॥

पांइ गहे जब ते तुमरे तब ते कोऊ आंख तरे नही आन्यो ॥ राम रहीम पुरान कुरान अनेक कहैं मत एक न मान्यो ॥ सिम्रत सासत्र बेद सबै बहु भेद कहैं हम एक न जान्यो ॥ श्री असिपान कृपा तुमरी करि मैं न कह्यो सब तोहि बखान्यो ॥

दोहरा ॥

सगल दुआर कउ छाडिकै गहिउ तुहारो दुआर॥ बांहि गहे की लाज अस गोबिंद दास तुहार ॥

रामकली महला ३ अनंदु

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ ॥ सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥ राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ ॥ सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइआ ॥ कहै नानकु अनंदु होआ सतिगुरू मै पाइआ ॥१॥ ए मन मेरिआ

तू सदा रहु हरि नाले ॥ हरि नालि रहु तू मंन मेरे दूख सभि विसारणा ॥ अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥ सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥ कहै नानकु मंन मेरे सदा रहु हरि नाले ॥२॥ साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै॥घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए॥ सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए॥ नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे॥ कहै नानकु सचे साहिब किआ नाही घरि तेरै ॥३॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥ साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ॥

करि सांति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि पुजाईआ ॥ सदा कुरबाणु कीता गुरू विटहु जिस दीआ एहि वडिआईआ ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु सबदि धरहु पिआरो ॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥४॥ वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै ॥ घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ ॥ पंच दूत तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ॥ धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरिकै लागे ॥ कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे ॥५॥ अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥ पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल

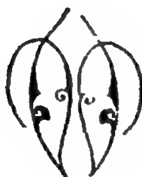
विसूरे ॥ दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥ संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥ सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥ बिनवंति नानक गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥४०॥१॥

मुंदावणी महला ५ ॥

थाल विचि तिंनि वसतू पईओ सतु संतोखु वीचारो ॥ अंमृत नामु ठाकुर का पइओ जिसका सभसु अधारो ॥ जे को खावै जे को भुंचै तिस का होइ उधारो ॥ एह वसतु तजी नह जाई नित नित रखु उरिधारो ॥ तम संसारु चरन लगि तरीऐ सभु नानक ब्रहम पसारो ॥१॥

सलोक महला ५ ॥

तेरा कीता जातो नाही मैनो जोगु कीतोई ॥ मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु पइओई ॥ तरसु पइआ मिहरामति होई सतिगुर सजणु मिलिआ ॥ नानक नामु मिलै तां जीवां तनु मनु थीवै हरिआ ॥१॥



अरदास

१ ओं वाहिगुरू जी की फतह ॥

श्री भगौती जी सहाइ। वार श्री भगौती जी की पातशाही १०। प्रथम भगौती सिमरि कै गुर नानक लईं धिआइ। फिर अंगद गुर ते अमरदासु रामदासै होईं सहाइ। अरजन हरगोबिंद नो सिमरौ श्री हरिराइ। श्री हरिकिशन धिआईऐ जिस डिठे सभि दुखि जाइ। तेग बहादर सिमरिऐ घर नउ निधि आवै धाइ। सभ थाईं होइ सहाइ। दसवां पातशाह श्री गुरू गोबिंद सिंह

महाराज जी ! सब थाईं होइ सहाइ ।
दशहों सत्गुरुओं के ज्योति स्वरूप श्री
गुरू ग्रन्थ साहिब जी के पाठ व दर्शन
का ध्यान धर कर बोलो जी वाहिगुरू !
पांच प्यारों, चार गुरू कुमारों, चालीस
मुक्तों, हठी-जपी-तपियों, जिन्हों ने
नाम जपा, बांट खाया, देग चलाई,
तेग़ चलाई, देख कर अडीठ किया, उन
प्रेमी सत्य वादियों की पवित्र कमाई का
ध्यान धर कर खालसा जी ! बोलो जी
वाहिगुरू !

जिन सिंह सिंहनियों ने धर्म्म
पर बलिदान दिये, अङ्ग २ कटवाए,
सिर की खोपरियां उतरवाईं, चर्खियों

पर चढ़ाए गये, कर्वत्त से तन चिरवाए, गुरुद्वारों के सुधार और पवित्रता के निमित्त शहीद हुए, धर्म नहीं छोड़ा सिख धर्म का केशों तथा प्राणों सहित पालन किया। उन की कृत्य कमाई का ध्यान धर कर खालसा जी! बोलो जी वाहिगुरू!

चारों तख़्तों, समूह गुरुद्वारों का ध्यान धर कर बोलो जी वाहिगुरू!

प्रथमे सर्व खालसा जी की अरदास है जी, सर्व खालसा जी को वाहिगुरू, वाहिगुरू, वाहिगुरू चित आवै, चित में आने से सर्व सुख हो। जहां जहां खालसा जी साहिब, तहां तहां रक्षा

रिश्रायत, देग–तेग फतह, विरद की लाज, पन्थ की जीत, श्री साहिब जी सहाय, खालसा जी का बोल बाला हो, बोलो जी वाहिगुरू ! ! !

सिखों का मन नम्र, मति ऊंची, मति का रक्षक स्वयं वाहिगुरू। हे निःमानों के सम्मान, निःत्राणों के त्राण, निःश्रोटों की श्रोट, निराश्रयों के आश्रय, सच्चे पिता वाहिगुरू! आप की सेवा में········की प्रार्थना है।

अक्षर लग मात्र भूल चूक क्षमा करना, सर्व के कार्य्य सिद्ध हों।

उन प्रेमियों का मिलाप हो जिन

के मिलने से चित में तेरे नाम का निवास हो।

नानक नाम चढ़दी कला।
तेरे भाणे सर्वत्त का भला॥

वाहिगुरू जी का खालसा।
श्री वाहिगुरू जी की फतह॥



१ ओं

सोहिला

सोहिला

रागु गउड़ी दीपकी महला १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो ॥ तितु घरि गावहु सोहिला सिवरिहु सिरजणहारो ॥१॥ तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥ हउ वारी जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥१॥रहाउ॥ नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥ तेरे दानै कीमति न पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥ २ ॥ संबति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु ॥ देहु सजण असीसड़ीआ जिउ होवै साहिब

सिउ मेलु ॥३॥ घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि ॥ सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवंनि ॥ ४ ॥ १ ॥

रागु आसा महला १ ॥

छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस ॥ गुरु गुरु एको वेस अनेक ॥ १ ॥ बाबा जै घरि करते कीरति होइ ॥ सो घरु राखु वडाई तोइ ॥१॥ रहाउ॥ विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु होआ ॥ सूरजु एको रुति अनेक ॥ नानक करते के केते वेस ॥ २ ॥ २ ॥

रागु धनासरी महला १ ॥

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥ धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल

वनराइ फूलंत जोती ॥१॥ कैसी आरती होइ भवखंडना तेरी आरती ॥ अनहता सबद वाजंत भेरी ॥१॥ रहाउ ॥ सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति नना एक तुोही॥ सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥ २ ॥ सभ महि जोति जोति है सोइ ॥ तिसदै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥ गुर साखी जोति परगटु होइ॥ जो तिसु भावै सो आरती होइ ॥३॥ हरि चरण कवल मकरंद लोभितमनो अनदिनुो मोहि आही पिआसा॥ कृपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जाते तेरै नाइ वासा ॥४॥३॥

गुरा गउडी पूरबी महला ४ ॥

कामि करोधि नगरु बहु भरिआ मिलि साधू खंडल खंडा हे ॥ पूरबि लिखत लिखे गुरु पाइआ मनि हरि लिव मंडल मंडा हे ॥१॥ करि साधू अंजुली पुनु वडा हे ॥ करि डंडओत पुनु वडा हे ॥१॥ रहाउ ॥ साकत हरि रस सादु न जाणिआ तिन अंतरि हउमै कंडा हे॥जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डंडा हे ॥२॥ हरि जन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भव खंडा हे ॥ अबिनासी पुरखु पाइआ परमेसरु बहु सोभ खंड ब्रहमंडा हे ॥३॥ हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राखु राखु वड वडा हे॥ जन नानक नामु अधारु टेक

है हरि नामे ही सुखु मंडा हे ॥४॥४॥

रागु गउडी पूरबी महला ५ ॥

करउ बेनंती सुणहु मेरे मीता संत टहल की बेला ॥ ईहा खाटि चलहु हरि लाहा आगै बसनु सुहेला ॥ १ ॥ अउध घटै दिनसु रैणा रे ॥ मन गुर मिलि काज सवारे ॥१॥ रहाउ॥ इहु संसारु बिकारु संसे महि तरिओ ब्रहम गिआनी॥जिसहि जगाइ पीआवै इहु रसु अकथ कथा तिनि जानी ॥२॥ जाकउ आए सोई बिहाझहु हरि गुर ते मनहि बिसेरा ॥ निज घरि महलु पावहु सुख सहजे बहुरि न होइगो फेरा॥३॥ अंतरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे॥ नानक दासु इहै सुखु मागै मोकउ करि संतन की धूरे ॥ ४ ॥ ५ ॥

बारह माहा

माझ महला ५ घरु ४ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम ॥ चारि कुंट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम ॥ धेनु दुधै ते वाहरी कितै न आवै काम ॥ जल विनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम ॥ हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ विसराम ॥ जितु घरि हरिकंतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम ॥ सर्ब सीगार तंबोल रस सणु देही सभ खाम ॥ प्रभ सुआमी कंत विहूणीआ मीत सजण

सभि जाम ॥ नानक की बेनंतीआ करि किरपा दीजै नामु ॥ हरि मेलहु सुआमी संगि प्रभ जिसका निहचल धाम ॥ १ ॥

चेति गोविंदु अराधीऐ होवै अनंदु घणा॥ संत जना मिलि पाईऐ रसना नामु भणा ॥ जिनि पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि गणा ॥ इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा बिरथा जनमु जणा ॥ जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ विचि वणा ॥ सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु गणा ॥ जिनी राविआ सो प्रभू तिंना भागु मणा ॥ हरि दरसन कंउ मनु लोचदा नानक पिआस मना ॥ चेति मिलाए सो प्रभू तिस कै पाइ लगा ॥२॥

वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ जिना प्रेम बिछोहु ॥ हरि साजनु पुरखु विसारि कै लगी माइआ धोहु ॥ पुत्र कलत्र न संगि धना हरि अविनासी ओहु ॥ पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु ॥ इकसु हरि के नाम बिनु अगै लईअहि खोहि ॥ दयु विसारि विगुचणा प्रभ बिनु अवरु न कोइ ॥ प्रीतम चरणी जो लगे तिनकी निरमल सोइ ॥ नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइ ॥ वैसाखु सुहावा तां लगै जा संतु भेटै हरि सोइ ॥३॥

हरि जेठि जुड़ंदा लोडीऐ जिसु अगै सभि निवंनि ॥ हरि सजण दावणि

लगिआ किसै न देई बंनि ॥ माणक मोती नामु प्रभ उन लगै नाही संनि ॥ रंग सभे नाराइणै जेते मनि भावंनि ॥ जो हरि लोड़े सो करे सोई जीअ करंनि ॥ जो प्रभि कीते आपणे सेई कहीअहि धंनि ॥ आपण लीआ जे मिलै विछुड़ि किउ रोवंनि ॥ साधू संगु परापते नानक रंग माणंनि ॥ हरि जेठु रंगीला तिसु धणी जिस कै भागु मथंनि ॥ ४ ॥

आसाड़ु तपंदा तिसु लगै हरि नाहु न जिना पासि ॥ जगजीवन पुरखु तिआगि कै माणस संदी आस ॥ दुयै भाइ विगुचीऐ गलि पईसु जम की फास ॥ जेहा बीजे सो लुणै मथै जो लिखिआसु ॥

रैणि विहाणी पछुताणी उठि चली गई निरास ॥ जिन कौ साधू भेटीऐ सो दरगह होइ खलासु ॥ करि किरपा प्रभ आपणी तेरे दरसन होइ पिआस ॥ प्रभ तुधु बिनु दूजा को नही नानक की अरदासि ॥ आसाड़ु सुहंदा तिसु लगै जिसु मनि हरि चरण निवास ॥५॥

सावणि सरसी कामणी चरन कमल सिउ पिआरु ॥ मनु तनु रता सच रंगि इको नामु अधारु ॥ बिखिआ रंग कूड़ाविआ दिसनि सभे छारु॥ हरि अंमृत बूंद सुहावणी मिलि साधू पीवणहारु ॥ वणु तिणु प्रभ संगि मउलिआ संम्रथ पुरख अपारु ॥ हरि मिलणै नो मनु

लोचदा करमि मिलावणहारु ॥ जिनी सखीए प्रभु पाइआ हंउ तिन कै सद बलिहार ॥ नानक हरि जी मइआ करि सबदि सवारणहारु ॥ सावणु तिना सुहागणी जिन रामनामु उरि हारु ॥६॥

भादुइ भरमि भुलाणीआ दूजै लगा हेतु ॥ लख सीगार बणाइआ कारजि नाही केतु ॥ जितु दिनि देह बिनससी तितु वेले कहसनि प्रेतु॥ पकड़ि चलाइनि दूत जम किसै न देनी भेतु॥ छडि खड़ोते खिनै माहि जिन सिउ लगा हेतु॥हथ मरोड़ै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु॥ जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ॥ नानक प्रभ सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देतु ॥

कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु॥ परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग ॥ वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ॥ खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग ॥ विचु न कोई करि सकै किस थै रोवहि रोज ॥ कीता किछू न होवई लिखिआ धुरि संजोग ॥ वडभागी मेरा प्रभु मिलै तां उतरहि सभि विओग ॥ नानक कउ प्रभ राखि लेहि मेरे साहिब बंदी मोच ॥ कतिक होवै साध संगु विनसहि सभे सोच ॥९॥

मंघिरि माहि सोहंदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह ॥ तिन की सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलड़ीआह ॥ तनु मनु

मउलिआ राम सिउ संगि साध सहेलड़ीआह ॥ साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह ॥ तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह॥ जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह ॥ रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह ॥ नानक बांछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह ॥ मंघिरि प्रभु आराधना बहुड़ि न जनमड़ीआह ॥१०॥

पोखि तुखारु न विआपई कंठि मिलिआ हरि नाहु॥ मनु बेधिआ चरनारबिंद दरसनि लगड़ा साहु ॥ ओट गोविंद गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु॥ बिखिआ पोहि न सकई मिलि साधू गुण गाहु ॥

जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु॥ करु गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न विछुड़ीआहु॥ वारि जाउ लख वेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु ॥ सरम पई नाराइणै नानक दरि पईआहु ॥ पोखु सोहंदा सरब सुख जिसु बखसे वेपरवाहु ॥११॥

माघि मजनु संगि साधूआ धूड़ी करि इसनानु ॥ हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु ॥ जनम करम मलु उतरै मन ते जाइ गुमानु ॥ कामि करोधि न मोहीऐ बिनसै लोभु सुआनु ॥ सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ॥ अठसठि तीरथ सगल पुंन

जीअ दइआ परवानु ॥ जिस नो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु ॥ जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरवानु ॥ माघि सुचे से कांढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु ॥१२॥

फलगुणि अनंद उपारजना हरि सजण प्रगटे आइ ॥ संत सहाई राम के करि किरपा दीआ मिलाइ ॥ सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा नाही जाइ ॥ इछ पुनी वडभागणी वरु पाइआ हरि राइ ॥ मिलि सहीआ मंगलु गावही गीत गोविंद अलाइ ॥ हरि जेहा अवरु न दिसई कोई दूजा लवै न लाइ ॥ हलतु पलतु सवारिओनु निहचल दितीअनु जाइ ॥

संसार सागर ते रखिअनु बहुड़ि न जनमै धाइ॥ जिहवा एक अनेक गुण तरे नानक चरणी पाइ॥ फलगुणि नित सलाहीऐ जिसनो तिलु न तमाइ ॥१३॥

जिनि जिनि नामु धिआइआ तिन के काज सरे॥ हरि गुरु पूरा आराधिआ दरगह सचि खरे॥ सरब सुखा निधि चरण हरि भउजलु बिखमु तरे॥ प्रेम भगति तिन पाईआ बिखिआ नाहि जरे॥ कूड़ गए दुबिधा नसी पूरन सचि भरे॥ पारब्रहमु प्रभु सेवदे मन अंदरि एकु धरे॥ माह दिवस मूरत भले जिन कउ नदरि करे॥ नानकु मंगै दरस दानु किरपा करहु हरे॥१४॥१॥

गुरुद्वारा प्रिंटिङ्ग प्रेस (रामसर रोड)
अमृतसर में छपा ।

